आँख का नशा

शिक्षाप्रद
सामाजिक नाटक।

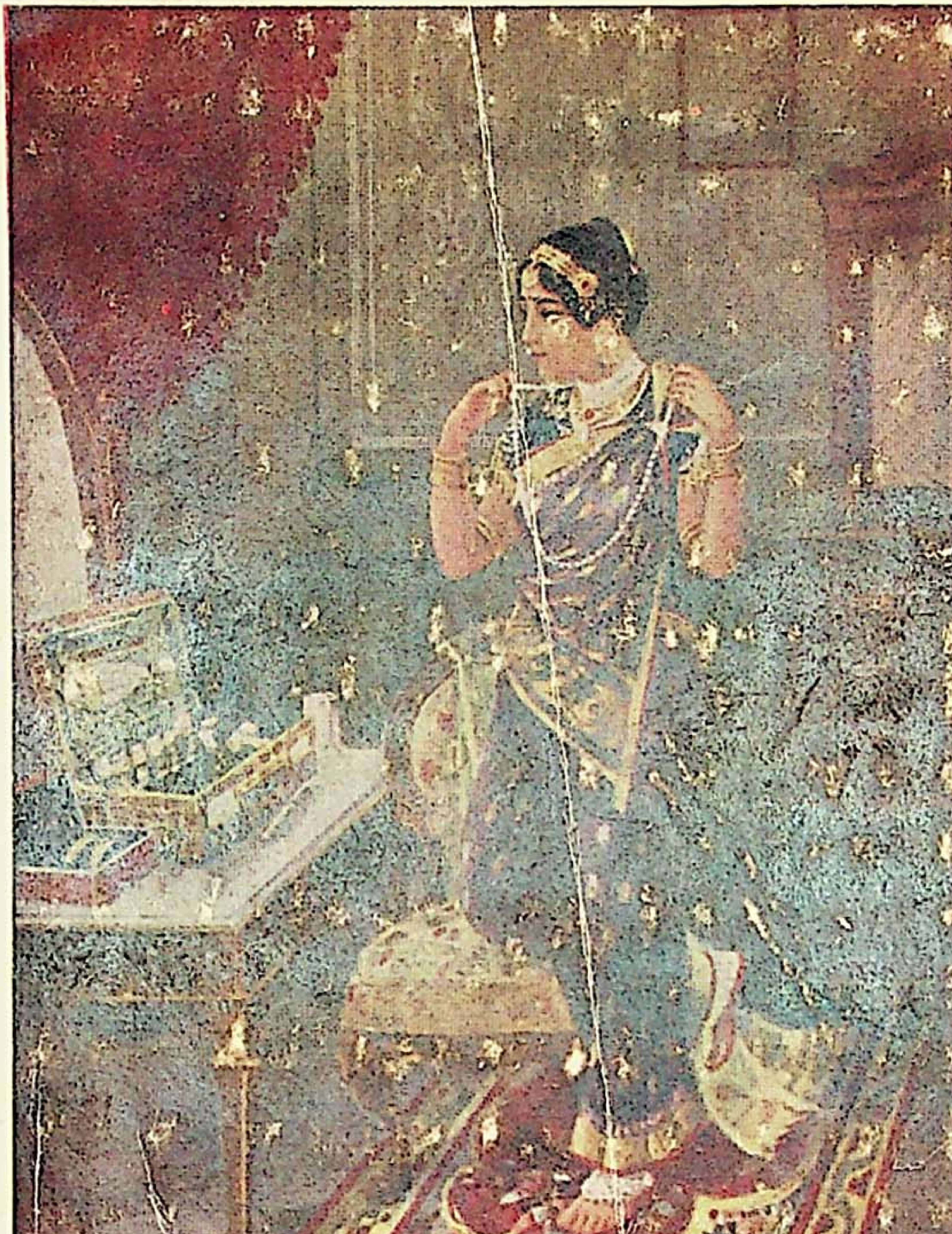

प्रकाशक — रत्नाकर पुस्तकालय,
बनारस सिटी।

Taj Tahir Foundation

आँख का नशा

सचित्र शिक्षाप्रद सामाजिक नाटक

लेखक—

स्वर्गीय बाबू दुर्गाप्रसाद गुप्त

Taj Tahir Foundation

प्रकाशक:—

रत्नाकर पुस्तकालय,

बनारस सिटी।

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—

लक्ष्मी-प्रेस, नीलकण्ठ बनारस में मुद्रित।

द्वितीय संस्करण]   संवत् १९८८   [मूल्य ।॥)

Taj Tahir Foundation

आँख का नशा

प्रथम अङ्क

प्रथम दृश्य

(सरोजिनी का सखियों के साथ झूला झूलते दिखायी देना)

* गाना *

आली पावस ऋतु आयी, बन बल्लरियाँ हरियायी ।
देखो बन बन बहार, मोरी सजनी है उपवन फूला ॥
उझकि उझकि, झुकि झुकि, झकरे झूलोरी झूला ।
छटा लखिके हिय हर्षायी, लखोरी बदरी घिरियायी ॥ आ० ॥
बादल गर्जत दामिनी दमकत, करत पपीहा शोर ।
फुहि-फुहि पड़त फुहार मनोहर, नाचि रहे बन मोर ॥
छबी यह मोरे मन भायी ॥ आली० ॥

(जुगलकिशोर का आना, सब सखियों का जाना)

Taj Tahir Foundation

जुगल०—कौन, सरोजिनी ? अहा ! आज तो तुम्हारा चाँदसा मुहँ बड़ा ही सुन्दर दिखायी देता है। गोरे-गोरे गालों की लाली, गुलाब के फूल की पखड़ियों से भी अधिक मनोहर है। जिस पर लटकती हुई नागिन जैसी काली-काली लट, ऐसी शोभा दे रही हैं, मानो फूलों का रस पीने के लिये भौरों की भीर, अधीर हो रही है। कहो, सरोजिनी कहो, आज इतना शृङ्गार किसके लिये हुआ है ?

सरोजिनी—तुम्हारे लिये, प्रियतम ! तुम्हारे लिये। क्यों कि परमात्मा ने धर्म के डोरों में बाँध कर, इस पुष्पहार को तुम्हारे गले में डाल दिया है। इस लिये अब यह फूल संसार में तुम्हारे अतिरिक्त और किसी के भी काम में नहीं आ सकता।

जुगल०—तब तो मैं बड़ा ही भाग्यवान हूँ। जो स्वर्ग के वृक्षों की डाल में आनन्द से अठखेलियां करनेवाली कुसुम-कलिका को बेपरिश्रम ही पा लिया है। जिसको देखने के लिये संसार की सहस्रों आँखें ललायित रहा करती हैं वह स्वयं ही मुझे अपनी आँखों में बिठाने के लिये तैयार है। फिर मेरे भाग्य का क्या कहना ! वास्तव में सरोजिनी, मैं तुम्हें पाकर कृतार्थ होगया हूँ।

सरोजिनी—और मैं तुम्हारी चरण-सेवा से अपनी आत्मा को पवित्र बना रही हूँ।

जुगल०—क्यों प्रिये ! क्या स्वर्ग में इस प्रेम-मिलन से

Taj Tahir Foundation

अधिक आनन्द मिलता है ?

सरोजिनी—नहीं नाथ ! जो आनन्द प्रेम में है, वह विश्व के किसी भी लोक में नहीं मिल सकता है ।

जुगल०—तो फिर यह मान लेना होगा कि प्रेम ही स्वर्ग है ?

सरोजिनी—अवश्य, जहाँ प्रेम का शोता वह रहा है, जहाँ स्नेह का नीर बरस रहा है, जहाँ दो आत्माएँ एक होकर आनन्द से प्रेम के पटरों पर पेंग मार रही हैं, जहाँ युगल-प्रेमी पलकों की पिचकारियों से—स्नेह के नीर से धुले हुए प्रेम के रंग से मन के साथ काया के कपड़ों को भी प्रेम के रंग में रँग रहे हैं, जहाँ प्रेम का प्याला पीकर युगल-प्रेमी अपनेतक को भूल गये हैं, वह स्थान स्वर्ग से भी बढ़कर है । फिर मेरे लिये तो आपकी चरण-सेवा में ही स्वर्ग और मुक्ति दोनों ही हैं ।

* गाना *

स्वर्गसुख जीवन का आनन्द, सती को है प्रीतम पग में ।
पति ही पत, पति ही परमेश्वर, पति-पद प्राण अधार ॥
सती का पति-पद, प्राण अधार ॥
पतिव्रता नारी का जगमें, है पति ही शृङ्गार ।
सती का है पति ही शृङ्गार ॥
अगम संसार धार में नारी—नैया का पति खेवनहार ।
पति-भक्ति से बेड़ा पार, सती का होता है जगमें ॥स्वर्ग०॥

दासी—(आकर जुगलकिशोर से) बाहर कमरे में बेनी-बाबू आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

जुगल०—जाकर कह दो, अभी आता हूँ ।

दासी—जो आज्ञा ! (दासी का जाना)

जुगल०—अच्छा, प्रिये ! अब आज्ञा देओ । क्योंकि बेनी-बाबू के साथ जरा घूमने जाना है ।

सरोजिनी—जाइये, तबतक मैं भोजन का प्रबन्ध करती हूँ । पर शीघ्र ही आने की कृपा कीजियेगा ।

(जुगलकिशोर का एक तरफ, सरोजिनी का दूसरी तरफ जाना)

Taj Tahir Foundation

द्वितीय दृश्य

कामलता वेश्या का मकान

(सदारंग, सारंगिया और नीलकण्ठ तबलची का प्रवेश ।)

नीलकण्ठ—कहो गुरु सदारंग, आजकल बेनीबाबू का रंग तो कुछ फीका सा नजर आ रहा है। कहाँ तो बिना माँगे ही बात-बात पर रुपयों की बौछार मचा देते थे और कहाँ अब माँगने पर भी रुपयों का सन मिटा कर जेब से बाहर निकालते हैं। मैं देखता हूँ कि रईश भी चालाक होते जाते हैं।

सदारंग—तो तुम क्या चाहते हो कि ये सदा बेवक़ूफ़ ही बने रहें ?

नील०—और नहीं तो क्या ! इनके चालाक होने में अपना लाभ ही क्या ? हम लोग तो यही मनाते हैं कि हमेशा कोई आँख का अन्धा और गाँठ का पूरा फँसा करे। जो अपने बाप-दादों की हड्डी-तोड़ कमाई से हमारा जेब भरा करे।

सदा०—चुप, चुप, देख सामने से कोई आ रहा है।

नील०—अजी आने भी देओ। वही बेनीबाबू होंगे, और भला दिन के वखत कौन आने लगा है।

सदा०—हैं तो बेनीबाबू ही, पर उनके साथ में कोई नया शिकार भी है ?

Taj Tahir Foundation

नील०—नया शिकार ! धन्य मेरे करतार।

बेनी०—(जुगलकिशोर के साथ आकर) आओ मित्र ! बेधड़क चले आओ। यह भी अपना ही घर है।

सदा०
नील० } सलाम सरकार !

बेनी०—सलाम। बाई जी कहाँ हैं ?

सदा०—अभी आती हैं सरकार ! आप बैठिये, आपके आने की सूचना दे देता हूँ।

(सदारंग का अन्दर जाना)

Taj Tahir Foundation

बेनी०—बैठो मित्र, हैं ! तुम घबराहट से चारों तरफ क्या देख रहे हो ?

जुगल०—यही कि मैं कहाँ आ गया हूँ ? स्वर्ग में, या नर्क में ? सच बताओ बेनीबाबू, तुम मुझे कहाँ लेवा लाये हो ? यह किसका मकान है ? और मैं कहाँ हूँ ?

बेनी०—मित्र, तुम इतना घबड़ा क्यों रहे हो, जब कि तुम मेरे साथ हो, तब तुम्हें यह सोचने की क्या जरूरत है, कि तुम कहाँ हो ?

जुगल०—यह इस लिये कि इस स्थान पर आते ही मेरी आत्मा में हलचली मच गयी है। हृदय अन्दर ही अन्दर यहाँ आने पर मुझे धिक्कार रहा है। मुझे मालूम हो रहा है कि मैं पाप-पथ पर आ रहा हूँ। यही कारण है कि मैं घबरा रहा हूँ ! जबतक मुझे यह न मालूम हो जाय कि यह किसका

मकान है, मुझे यहाँ एक क्षण भी ठहरना भारी मालूम होरहा है। बताओ ? बेनीबाबू सच बताओ ? यह किसका मकान है ?

बेनी०—सुनना ही चाहते हो तो सुनो, यह कलकत्ते की प्रसिद्ध रूपवती वेश्या, कामलता का मकान है। जिसकी एक एक चितवन के लिये बड़े बड़े धनाढ्य तरसा करते हैं।

कामलता—(आकर) परन्तु वह तो बेनीबाबू की एक दृष्टि पर अपने आपको लुटा बैठी है।

बेनी०—कौन, प्यारी कामलता !

काम०—जी हाँ, आपकी दासी कामलता। पर आज यह आपके साथ कौन महाशय पधारे हैं ? यह तो बताइये, जरा आपका परिचय तो सुनाइये ?

बेनी०—परिचय और आपका, क्या तुम इनको नहीं जानती हो ?

काम०—भला मैं बिना बताये किसी को कैसे जान सकती हूँ।

बेनी०—तो सुनो, आप बड़ा बाजार के सबसे बड़े धनाढ्य और कलकत्ते के सुप्रसिद्ध जुगलकिशोर बाबू हैं।

काम०—हाँ, हाँ, नाम तो सुना था, परन्तु दर्शनों का सौभाग्य तो आज ही प्राप्त हुआ है। कहिये, बाबू साहब ! आपका मिज़ाज़ तो अच्छा है ?

जुगल०—ईश्वर की कृपा है।

काम०—जरा इधर देखिये, आप सिर झुकाकर क्या

Taj Tahir Foundation

सोच रहे हैं? मुझसे कोई बेअदबी तो नही हुई है? बताइये, आप किस बिचार में पड़े हुए हैं?

जुगल०—यही कि आज मैं अपनी आत्मा के साथ अत्याचार कर रहा हूँ; चलो बेनीबाबू घर चलो!

बेनी०—चलते हैं, आखिर तुम इतना घबड़ाते क्यों हो? और ऐसी जल्दी ही क्या है?

काम०—क्यों क्या यहाँ का बैठना भी बुरा मालूम होता है। जुगलबाबू आखिर मुझसे कौन सा अपराध हुआ है, जो आप इतना रुष्ट हो गये हैं?

सदा०—बैठिये सरकार, देखिये; बाईजी की तरफ देखिये। हँसिये, बोलिये, घड़ी दो घड़ी जी बहलाइये। फिर जब आपकी इच्छा हो चले जाइयेगा।

नील०—अगर हुकुम हो तो साज मिलाऊँ और संगीत के सुरों से हुजूर का जी बहलाऊँ?

बेनी०—हाँ, हाँ, मिलाओ, मिलाओ, उस्ताद जी साज मिलाओ। और मेरे मित्र का मन बहलाओ! बाईजी, जरा आप भी अपना चमत्कार दिखाइये, और इस घर को इन्द्र का अखाड़ा बनाइये। याद रक्खो, यदि मेरे मित्र का मन बहलाओगी, तो काफ़ी इनाम पाओगी।

काम०—जो आज्ञा! परन्तु बेनीबाबू, आप रुपयों का लोभ मुझे न दिखाया कीजिये, मैं रुपयों को नहीं, मनुष्य को प्यार करती हूँ। मुझे दुःख होता है कि आप इतने दिनों से

आते हैं; परन्तु मेरे स्वभाव को न जानकर, फिर भी मुझे रुपयें का लोभ दिखाते हैं !

बेनी०—अच्छा भाई, अपराध हुआ, क्षमा करो ।

काम०—क्षमा की कोई बात नहीं है, यह तो केवल बात की बात थी, जिस कष्ट को न छिपा रखने के कारण, कह दिया, अच्छा कहिये क्या सुनाऊँ ?

बेनी०—जो तुम्हारा जी चाहे ।

(उस्ताद साज बजाते हैं, कामलता गाती है)

※ गाना ※

शिकवा करते हैं ज़बाँ से न गिला करते हैं ।
तुम सलामत रहो हम येही दुआ करते हैं ॥
तुम मुझे हाथ उठाकर जो अदा से कोसो ।
देखने वाले ये समझे की दुआ करते हैं ॥
इन हसीनों का है दुनियाँ से निराला अन्दाज़ ।
शोखिये बज्म में खिलकत में हया करते हैं ॥
बेचने लाया हूँ बाज़ार में लेले कोई ।
दिल ही कमबख्त है ऐसा कि जुदा करते हैं ॥

जुगल०—वाह, बहुत अच्छे ।

बेनी०—निस्सन्देह, कामलता ! तुम गान-विद्या में स्वर्ग की अफ़सराओं को भी मात करती हो । वाह ! उस्ताद, वाह ! तुम लोगों ने भी कमाल किया ।

Taj Tahir Foundation

खतम है सारंगी का सुर में बजाना आप पर।
नाच उठता था हृदय, तबले की हरएक थाप पर॥
कण्ठ-कोकिल वार डालूँ, बाईजी के गान पर।
क्या अदा से भौं हिली, कि बन गई याँ जान पर॥

कामलता—आदाब अर्ज है!

आती है बहुत तुमको अब चाल लगावट की।
मन ही में अपने रक्खो यह बात बनावट की॥

बेनी०—अच्छा, एक फड़कती हुई ग़ज़ल तो और सुनाओ।

काम०—खुशी से सुनिये।

(उस्ताद साज बजाते हैं, जुगलकिशोर उठ खड़ा होता है)

जुगल—अच्छा बेनीबाबू, मुझे तो आज्ञा दीजिये।

बेनी०—(जुगल का हाथ पकड़ कर) बैठो भाई, एक चीज़ तो और सुन लो।

जुगल०—आठ बज रहा है, भोजन का समय होगया है।

बेनी०—भोजन की इच्छा हो तो यहीं मँगाऊँ?

जुगल०—नहीं, ऐसी इच्छा नहीं है किन्तु—

काम०—जाना ही चाहते हैं तो चले जाइयेगा। दस मिनिट तो और बैठिये। नहीं तो मेरे दर्दिल की कहानी तो सुन लीजिये।

जुगल०—उसे बेनीबाबू को ही सुनाइये, क्योंकि यही उसके सुनने के योग्य हैं।

काम०—और जो मैं आपको सुनाना चाहूँ?

Taj Tahir Foundation

जुगल०—व्यर्थ होगा !

काम०—खैर, मेरे दिल का अरमान तो निकल जायगा। अगर मेरी दर्दभरी आह ने आपके दिल पर असर न किया, तो मैं समझ लूँगी कि मेरी आह में तासीर ही नहीं है।

बेनी०—सुन लीजिये, जुगलबाबू ! केवल दस मिनट के लिये क्यों किसी को कष्ट देते हैं। हाँ, कामलता शुरू करो।

(हाथ पकड़ कर बैठा लेता है, जुगल लाचार होकर बैठ जाता है)

*** गाना ***

नालये दिलगीर नहीं आह में तासीर नहीं।
हाय मिलने की अब उनसे कोई तद्बीर नहीं॥
एक वह हैं कि हरएक बात है जिसकी जादू।
एक मैं हूँ कि मेरी आह में तासीर नहीं॥
काट कर सर को मेरे हँसकर रकीबों से कहा।
ये भी एक नाज़ है इसमें मेरी तकसीर नहीं॥
आशिके जुल्फ हूँ लेकिन नहीं शोहदा मिजाज़।
है जुनु मुझको मगर कालिबे जंजीर नहीं॥

बेनी०—वाह, वाह, क्या कहना है, लेओ अपना इनाम।

काम०—रक्खे रहो, मैं इस न रहनेवाले इनाम को लेकर क्या करूँगी ? अगर इनाम ही देना चाहते हैं, तो जो मैं माँगूँ वह देओ, जिससे मैं सन्तुष्ट हो सकूँ।

Taj Tahir Foundation

बेनी०—कहो, क्या चाहती हो ?

काम०—वायदा करो, दोगे ?

बेनी०—कहो भी क्या चाहती हो ?

काम०—जीवन का साथी !

किसी की कालि अलकों में, ये मेरा बँध गया दिल है।
उसी को चाहती हूँ दिल से, जोकि मेरा कातिल है॥

बेनी०—वह कौनसा भाग्यशाली है ? जरा मैं भी तो सुनूँ।

काम०—वह ये हैं (जुगलकिशोर की तरफ उँगली का इशारा करके) जिन्हें यहाँ से जाने की जल्दी पड़ी है।

मुझे वश कर लिया है नैन से जादू चला करके।
ये मेरे मन को मोहा है मधुर सूरत दिखा करके॥
दिखा के रुख रुखाई आप अब मुझको दिखाते हैं।
शिकारी जाता है आखेट को घायल बना करके॥
चाहती हूँ मैं उसी को जिसकी मुझको चाह है।
वर्न इनकी राह वह तो, यह हमारी राह है॥

(छुरी निकाल कर कलेजे में भोंकने का नाट्य करती है, बेनीबाबू झट हाथ पकड़ लेते हैं)

बेनी०—हैं ! हैं ! यह कैसा पागलपन ?

काम०—पागलपन नहीं, बेनीबाबू; इसी का नाम है, सच्ची लगन !

क्या करूँगी जीके जब जीने का चारा ही नहीं।
प्राण है बेकार जिसका प्राणप्यारा ही नहीं॥

जुगल०—हैं! यह कैसा जाल है?

काम०—जाल नहीं, यह मेरे मन का सच्चा हाल है।

जुगल०—क्या?

काम०—यही कि या तो तुम मेरे होगे, या मैं ही संसार में न रहूँगी।

बेनी०—कामलता! मैं तुम्हारा प्रेमी हूँ, तुम्हें मेरे सामने दूसरे पर प्रेम जताते लज्जा नहीं आती?

काम०—तब, जब मैं अपनी होती, जब मैं ही दूसरे की हो चुकी हूँ, तब फिर मुझे सोचने का समय ही कहाँ है? (जुगल का दामन पकड़ कर) बोलो, बोलो, प्यारे! तुम भी बोलो, कि मैं तुम्हारा हूँ।

Taj Tahir Foundation

जुगल०—कामलता!

काम०—मेरे मन-मन्दिर के देवता! कहो क्या कहते हो? आज्ञा देओ, मैं तुम्हारी आज्ञा पर जीने-मरने को तैयार हूँ।

जुगल०—क्या कहूँ, मैं किसी और को मन दे चुका हूँ। इस लिये लाचार हूँ।

काम०—तो मुझे केवल दर्शन की भीख देओ। कहो, कहो, शीघ्र कहो, कि एक बेर एक घण्टे के लिए नित्य आओगे? बोलो, चुप न हो, मैं केवल दर्शन चाहती हूँ, तुम्हारी सेवा करके अपने को कृतार्थ बनाना चाहती हूँ। फिर वही चुप्पी, बेनीबाबू मुझपर दया करो। यदि हृदय की

गति जानते हो, प्रेम के प्रवाह से परिचित हो, तो क्रोध और ईर्षा को छोड़कर मुझपर दया करो। अपने मित्र को समझाओ और मेरा जीवन बचाओ।

अगर ये हैं तो मैं हूँ विश्व का आनन्द सारा है।
नहीं तो सूर्य्य के होते भी मुझको जग अँधियारा है॥
डुबावें या उबारें शक्ति सारी हाथ इनके है।
न समझो फर्क इसमें मेरा जीवन साथ इनके हैं॥
सुखी होगी चकोरी चन्द्रमुख, जब देख पायेगी।
ये इस घर से गये, इस तन से मेरी जान जायेगी॥

बेनी०—कामलता! धैर्य्य धरो। भाई जुगल, मुझे क्षमा करो, कि मैं तुमसे इस प्रेमातुरा रमणी के लिये दया की भीख माँगता हूँ।

जुगल०—बेनीबाबू मैं विवश हूँ।

बेनी०—मैं प्रेम से परिचित हूँ। इस लिये अपने हृदय पर पत्थर रखकर तुम्हें इसके प्रेम का आदर करने के लिये अनुरोध करता हूँ।

जुगल०—तो फिर मैं क्या करूँ?

बेनी०—इस पर दया।

जुगल०—क्या?

काम०—दर्शन की भिक्षा। प्यारे! अगर तुम मुझसे प्रेम करना नहीं चाहते तो न सही, मुझको प्रेम की उचटती निगाहों से देख लिया करो। हृदय से लगाने के लिये नहीं,

Taj Tahir Foundation

तो केवल संसार में मुझे जिलाने के लिये एक बेर नित्य यहाँ आया करो ।

बेनी०—कहो स्वीकार है ?

जुगल०—जुगल तुम्हारे अनुरोध से ऐसा करने पर तैयार है ।

काम०—(पैर पर गिर कर) प्यारे !

जुगल०—(हाथ पकड़ कर) उठो, उठो !

Taj Tahir Foundation

तृतीय दृश्य

(अंग्रेजी सूट-बूट पहिने मि० डफालचन्द बी० ए० एल० एल० बी० का प्रवेश)

डफालचन्द—(मोछों पर ताव देता हुआ) भाइयों मेरा नाम मि० डफालचन्द बी० ए० एल० एल० बी० वकील हाईकोर्ट है। मैं तुम लोगों को सलाह देता हूँ कि सबसे पहिले विवाह करो। अवश्य विवाह करो। अगर कुँवारी स्त्री न मिले तो विवाहिता से विवाह करो। जवान न मिले तो बुढ़िया से ही ब्याह करो। पूछिये, किस लिये? तो इस लिये, कि पकी-पकाई खाने को तो मिलेगी! घर-गृहस्थों में मान तो होगा? बाप-दादों का नाम तो चलेगा? और सबसे बड़ी बात तो यह है कि विवाह करने पर एक से दो, एक वर्ष पीछे तीन; दो वर्ष पीछे चार, और फिर पाँच, फिर छ, फिर सात, बस इसी तरह बढ़ते बढ़ते एक से सत्रह और सत्रह से सत्तर हो जाओगे। क्यों ठीक है न? कह दो ठीक है, और नहीं तो क्या? आज-कल के आधी अक्ल वाले कहते हैं कि विवाह मत करो, नहीं तो कैदखाने में पड़ जाओगे। परन्तु मैं दिन-रात परमात्मा से यही मनाता हूँ,

Taj Tahir Foundation

कि कुँआरे जन्म लें, पर मरें नहीं। लोग मुझे कहते हैं कि मि० डफालचन्द भाग्य के बड़े हेठे हैं। सचमुच जब मैंने न्याय की कसौटी पर इस बातको परख कर देखा तो सोलहो आने ठीक बटर का सोना पाया। मेरे हतभाग्य का पहला प्रमाण यह है कि :अभी मेरे जन्म लेने की तयारी हो ही रही थी कि संसार में कलियुग महाराज ने अपना सिक्का जमा लिया। जब मैंने जन्म लिया तब मेरे कुल के सम्बन्धी घटने लगे। जब स्कूल में पढ़ने गया तो सौ में से निन्यानवे लड़के मेरे क्लास में फेल होने लगे। किसी तरह तीन वर्ष फेल होने के पश्चात् थर्डक्लास वकालत पास की तो अदालत के मामले पंचायत में निपटने लगे। झूठ-सच बोलकर जो दो-चार रुपये की आय होती थी वह पंचों को भेंट होने लगी। बस यह समझ लो कि जिस तरह पुलिस के रजिष्टर में नंबर दस के बदमाश होते हैं, उसी तरह भाग्य के रजिष्टर में मेरा नाम नम्बर दस के भाग्यहीनों में है। परन्तु एक बात है कि स्त्रियों के सम्बन्ध में मेरा भाग्य हिमालय पहाड़ की ऊँचाई से भी सवा सात फुट आगे बढ़ गया है। वाह वाह! स्त्री क्या मिली है, मानों इन्द्र के अखाड़े की परी है। बस, उसमें यदि कुछ अवगुण है तो इतना ही कि समझ उल्टी और स्वभाव सड़ा हुआ है। मैं पूरब चलने को कहता हूँ तो वह पश्चिम चलती है। मैं बिहाग छेड़ता हूँ तो वह भैरवी गाती है। मैं अपना ढोल पीटता हूँ तो वह

डफाली बजाती है। यानी अपनी ढाई चावल की खिचड़ी अलग ही पकाती है। अच्छा जी, जब दुनियाँ सुधर रही है, तब वह भी सुधर जायगी।

(नसीबो का प्रवेश)

नसीबो—(आते ही डफालचन्द की पीठ पर हाथ मार कर) क्यों जी! तुम अभीतक यहीं खड़े हो ? मैं तो समझती थी, किसी खखड़ा गाड़ी पर चढ़कर अदालत पहुँचे होगे।

डफाल०—(चिढ़कर) अरी कोई मुकद्दमा भी पऊँ, या अदालत में जाकर केवल टेबिल कुर्सी से माथा मार कर फिर आऊँ ?

Taj Tahir Foundation

नसीबो—तो घर में बैठकर क्या करोगे ?

डफाल०—करूंगा क्या, जिस तरह वहाँ बैठा बैठा मक्खियाँ मारा करता हूँ, उसी तरह यहाँ बैठा बैठा झख मारूंगा।

नसीबो—अजी, मैं पूछती हूँ कि जब तुम्हें एक महीने में दो तीन मुकद्दमे भी नहीं मिलते, तो वकालत पास करने की क्या पड़ी थी ?

डफाल—यह बात विश्रामघाट में जाकर मेरे पिता से पूछ आओ, जिन्होंने वकालत पढ़ाई (गुस्से में) क्या करूँ मर गये, नहीं तो पूछता कि मुझे और कोई व्यापार क्यों नहीं बताया ? जिससे जेब में रोज सौ पचास रुपये भर

कर लाता, तुम्हारी इस कञ्चन-काया को हीरे और पन्ने से जड़वाता और मनमानी मौज उड़ाता।

नसीबो—तो तुम्हारे पिता ने तुमको वकालत क्या पढ़ाई मानों शत्रुता की?

इफाल०—इसमें क्या सन्देह है। क्या कहूँ, प्यारी! यदि परमात्मा जन्म देने के पहले पूछता तो मैं ऐसे पिता के घर जन्म ही न लेता।

नसीबो—जब वकालत नहीं चलती तो कोई अच्छीसी नौकरी हो क्यों नहीं कर लेते?

इफाल०—(चिढ़कर) उहँ! नौकरी कहीं भीख की तरह मिलती है क्या कि जाऊँ और माँग लाऊँ? आजकल अच्छे अच्छे बी० ए०, एम० ए० दस दस रुपये की नौकरी के लिये अस्पताल में, रेल में, जेल में, ट्राम में, गोदाम में, तार में, अखबार में, शहर में नहर में, पैर में चिथड़े बाँधे हुए—"बरसो राम धड़ाके से, बुढ़िया मर गई फाँके से" की पुकार करते हुए हर एक से बिनती करते फिरते हैं, और फिर भी धक्के खाते हैं।

नसीबो—तो फिर?

इफाल०—फिर क्या? मैं उस समय नौकरी करूँगा जिस समय नौकर रखनेवाला हमारे घर पर आये, हाथ पाँव जोड़कर मुझे मनाये और कहे कि यदि तुम काम नहीं सँभालोगे तो संसार का दिवाला निकल जायगा और

इसपर भी मैं काम करूँ या न करूँ, घर बैठे उनतीसवें दिन मुझे आकर तनख्वाह दे जाय, तब तो नौकरी करने को मन में भाये। परन्तु प्यारी! एक बात और भी है कि तुझको छोड़कर कहीं जाने को जी भी तो नहीं चाहता।

(प्रस्थान)

(इतने में अन्दर से घड़ी के बजने की आवाज आती है, नसीबो गिनती जाती है)

नसीबो—एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पन्द्रह, सोलह, सत्रह, अट्ठारह, अररर इये मुई तो बजती ही चली जाती है।

(कल्लू नौकर का हाथ में डंडा लिये आना)

कल्लू—धत्तेरे की! सच कहा है। लातों के देवता बातों से नहीं मानते, टिक् टिक् टिक टिक् टिक् टिक् किये ही जाती थी।

नसीबो—कल्लू! ओ मुए कल्लू!

कल्लू—(नेपथ्य की ओर देखता हुआ) उहँ, टिक् टिक् टिक् टिक् टिक् टिक् टिक्!

नसीबे—अरे ओ मुए! टिक् टिक् के बच्चे! इधर देख।

कल्लू—कौन मालकिन? हट जाइये, मुझसे दूर रहिये। नहीं तो बुरी होगी। मुझे इस समय खून ही खून दिखायी देता है। मैं डंडे को दूर फेंकता हूँ पर यह फिर मेरे हाथों को पकड़ लेता है। टिक टिक् टिक टिक!

Taj Tahir Foundation

नसीबो—तो क्या इस डंडे से अपना सिर फोड़ेगा।

कल्लू—अपना सिर क्यों फोड़ूँगा? क्या दूसरों का सिर बन्धक रखा हुआ है? टिक् टिक् टिक्!

नसीबो—परन्तु इस समय तू पागल कुत्ते की तरह क्यों बौराया हुआ है? क्या हुआ?

कल्लू—हुआ क्या? जब तड़ से डंडा जमाया, तब मिजाज़ ठिकाने पर आया! टिक्!

नसीबो—अरे, किस पर डंडा जमाया? किसका मिजाज़ ठिकाने पर आया?

कल्लू—उसी पागल और झक्की घड़ी को, जो आपके शयनगृह में, शीशे के टेबिल पर पड़ी है।

नसीबो—(ताज्जुब से) वही जो अभी एक सप्ताह हुआ, डेढ़ सौ में ख़रीद कर आयी थी?

कल्लू—जब आप ने उसका दाम डेढ़ सौ रुपया लगाया तभी तो उसका मिज़ाज़ बिगड़वाया। वह समझने लगी थी कि डेढ़ सौ वाली को पांच वाले की आज्ञा मानने की क्या आवश्यकता है? बस यही झगड़ा था।

नसीबो—परन्तु तूने उसे किया क्या?

कल्लू—जब मैं भोजन बनाने से खाली हुआ, तो ज़रा कमर सीधी करने के लिये, आपके शयनगृह के बाहर लुढ़क गया और मुझ पर निद्रा-देवी ने अधिकार जमाया। मैं आराम से मीठी नींद में ख़र्राटे भरने लगा, तो मेरा सोना

Taj Tahir Foundation

देखकर वह जल गयी, और मेरी नींद खराब करने के लिये टिक् टिक् टिक् टिक् करने लगी। मैंने कहा,—बहन जरा शान्त हो, मैं सो कर उठूँ तो जितना चाहे टिक् टिक् कर लेना। परन्तु वह न मानी। फिर कहा कि माता मान जा! उसपर भी नहीं मानी। अन्त में उठकर हाथ जोड़ा, पाँव पड़ा, नाक रगड़ा, फिर भी वह कुसमय की सहनाई बजती ही रही। तब तो मेरा भी मिजाज गरमा गया और उस पर गहरा गुस्सा आ गया। बस, फिर क्या था, मैंने भी तान कर ऐसा डंडा जमाया कि उसको छट्ठी का दूध याद आया

नसीबो—अररर, क्या तूने डंडा जमाया? हैं हैं मुए! तूने यह क्या किया?

कल्लू—जी हाँ, केवल एकही डंडा जमाया और सीधा यहाँ चला आया?

नसीबो—अरे मूर्ख! तब तो वह चूर चूर होगयी होगी?

कल्लू—जी हाँ, परन्तु देखिये, उसकी दुष्टता! कि चुप रहने के बजाय और दूनी खट खट करने लगी।

नसीबो—(दाँत पीसती हुई) अरे बैल! कहीं घड़ी के भी कान होते हैं? जो तेरी आवाज़ सुनकर चुप हो जाती?

कल्लू—कान नहीं होते तो, आप चाभी किसमें दिया करती हैं?

नसीबो—(गुस्से से) परमात्मा तेरा सत्यानाश करे।

मुए! तैंने मेरी भली-चंगी घड़ी तोड़ डाली।

कल्लू—स्वामिन! आप चिन्ता न करिये, कुछ हानि नहीं हुई, केवल कमानी टूट गई है। चक्कर बिगड़ गया है। शीशा चूर हो गया है और उसके अन्दर वाला लङ्गर जो हाथी के सूँड़ के समान हिला करता है, वह अलग हो गया है और बाकी सब राजी खुशी है।

नसीबो—(स्वतः) लो सुनो। दुष्ट ने घड़ी के अञ्जर-पञ्जर तो ढीले कर दिये और फिर भी कहता है कि कोई हर्ज नहीं। सब ठीक है। जैसा पति है, वैसा ही नौकर भी मिला है। (कल्लू की पीठ पर हाथ मार कर) दुष्ट! तूने आज बड़ा नुकसान किया है।

(कुढ़ती हुई चली जाती है)

कल्लू—(पीठ सुहराता हुआ) हाय, हाय! इस शहर में कोई भी बुद्धिमान आदमी नहीं है। मैं अच्छा करता हूँ, तो लोग बुरा कहते हैं। कुछ दिन पहले मैंने यहाँ के "पक्षपात समाचार" के सम्पादक के यहाँ नौकरी की, तो वहाँ पर यहाँ से भी बढ़कर मरम्मत हुई। एक दिन सम्पादक महाशय ने पुकारा "अबे कालू" मैंने कहा "जनावे आलू"। उन्होंने कहा "पास आओ" मैंने कहा "उपस्थित हूँ सुनाओ!" तो कहने लगे, मैं सोता हूँ तुम रूमाल से मक्खियाँ उड़ाओ। मैंने पंखा झलना शुरू कर दिया। इतने में न जाने कहाँ से चार पाँच मक्खियाँ भिनभिनाती हुईं आ पहुंचीं और एक

Taj Tahir Foundation

के बाद एक कतार बाँधकर सम्पादक जी की नाक पर बैठ गयीं। मैंने कहा,—"अभी जाओ" पर वे नहीं गयीं। मैंने फिर कहा,—उड़ जाओ, नहीं उड़ीं। अन्त में मैंने डरा धमका के भगाया। परन्तु परमात्मा जाने सम्पादक जी की नाक पर कहाँ से रसगुल्ले का रस लगा था, कि वह फिर चाटने आ पहुँचीं। फिर उड़ा दिया, फिर आयीं। तब मेरे हृदय में नमकहलाली का ऐसा खून दौड़ आया कि मैंने चट ही क्रोध महाशय को बुलाया और सम्पादक जी की नाक पर ज्योंहीवे आकर बैठीं, त्योंही मैंने दन से एक सोटा जमाया। परन्तु भाग्य को देखो, सम्पादक जी तुरन्त ही नाक पकड़े हुए उठ खड़े हुए "अररर मेरी नाक" कहकर चिल्लाने लगे, और मुझे मार मार कर बाहर निकालने लगे। हम भी सम्मन पाकर घर की ओर जाने लगे। भाग्य से रास्ते में इन वकील साहेब ने रोता देखकर बुलाया और पाँच रुपये महीने पर मुझे नौकर रखकर मेरा आँसू पुछाया। अब मित्रो! तुम्हीं बताओ कि मैंने सम्पादक जी का क्या अपराध किया जो उन्होंने मुझे मार भगाया? यदि आप कहें कि मेरे डण्डे से उनकी नाक टूटी, तो मैं कहूँगा कि मक्खियों से तो उनकी जान छूटी? क्यों मैं हूँ न समझदार? वाह, वाह! मेरा माथा है, या बुद्धि का भण्डार!

* गाना *

वीर बहादुर हूँ दुनियाँ का सयाना हूँ, मेरा तो कल्लू है नाम।

Taj Tahir Foundation

झाँसा लड़ानेका, उल्लू फँसानेका, सारे जमानेका करता हूँ काम
फिर भी देता नहीं यह भाग गवाहो मेरी ।
लात घूसों से ही होती है कुटाई मेरी ॥
कहीं बुद्धि भी कभी काम न आयी मेरी ।
जहाँ जाता हूँ बस होती है विदाई मेरी ॥
पैसा कमाने का, रोटी भी खाने का,
लगता न चारा, न मिलता आराम ॥ वीर०

Taj Tahir Foundation

चतुर्थ दृश्य

जुगलकिशोर का मकान

(बेनीबाबू का अपनी प्रशंसा करते हुए आना)

बेनी०—कंगाल हूँ, बेनीबाबू है नाम हमारा।
और मुफ्त का खाना है सदा काम हमारा॥
जूता जुराव धोती और कुरता है लोगों का।
सब मूर्खों से होता है सरञ्जाम हमारा॥
धनवान कहें रात तो हम चाँद दिखा दें।
रहता है खुशामद से भरा जाम हमारा॥

वाह रे मेरे परमात्मा! निःसन्देह तू बड़ा कारसाज है। किसी न किसी रईस के दिमाग में सदैव वेश्यावासना की झक चढ़ा देता है और हम जैसे गरीबों की रोटी का ठिकाना बना देता है, फिर तो हमारे जैसे चालाक उन मूर्खों को खुशामद के हण्टर से मीठी मीठी मार मारकर, बन्दर की तरह नचाते हैं और आनन्द से बिना परिश्रम हलुआ पूड़ी उड़ाते हैं। आज-कल मेरे हाथ भी एक नया शिकार आ फँसा है और मैंने भी उसे खूब उल्लू बनाया है। यह लो, वह उल्लू का बच्चा भी आ पहुँचा; अब इसे बनाना चाहिये और

Taj Tahir Foundation

अपना जेब भी गरमाना चाहिये। (स्वतः) कामलता, कामलता ! क्या तू वास्तव में वफ़ादार है और क्या तू सच्चे दिल से जुगुलकिशोर पर निसार है ?

जुगल—(आकर स्वतः) हैं ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ ! क्या कामलता वास्तव में मुझे सच्चे दिल से चाहती है ?

बेनी—(स्वतः) उसके सच्चे प्रेम पर अविश्वास भी कैसे किया जाय ? जब कि उसने आज तीन दिन से खाना पीना तक छोड़ दिया है, ऐश-आराम, बनावट सजावट से मुँह मोड़ लिया है। कामलता एक बाजारू रण्डी है, फिर उसका विश्वास क्या ? क्या मैं यकीन कर लूँ कि ये बात सत्य है। परन्तु नहीं, जब मैंने अपनी आँखों देखा है फिर विश्वास क्यों न करूँ ? मैं हजारों में कहूँगा कि कामलता जुगलबाबू पर मरती है और अवश्य मरती है। (पीछे फिरकर) कौन ? मित्र ! आइये।

जुगल—कहो मित्र ! अभी आप ही आप मन में क्या बड़बड़ा रहे थे ? अब मुझे देखते ही चुप क्यों होगये ?

बेनी—कुछ नहीं मित्र, केवल कुछ घर का खर्च जोड़ रहा था।

जुगल—क्यों बातें बनाते हो, क्यमुझे दूसरा समझ हो। जो मुझसे सच्ची बात छिपाते हो।

बेनी—मित्र ! वह बात छिपाने की ही है।

जुगल—किन्तु मैंने तो उसे सुन लिया।

Taj Tahir Foundation

बेनी—हैं! क्या आपने उसे सुन लिया ? तब तो बहुत बुरा हुआ।

जुगल—क्या बुरा हुआ। क्या प्रेमी को प्रेमी का हाल सुनाना बुरा है ?

बेनी—अवश्य बुरा है। क्योंकि वह कोई शरीफ़ वेश्या नहीं है, बल्कि एक बाजारू रण्डी है। यह बात सत्य है कि वह आपको चाहती है—और दिल से आपको मुहब्बत करती है, किन्तु मेरी राय में उसका एतबार करना फजूल है, रण्डी से प्रेम करना भारी भूल है।

जुगल—अच्छा अब इस झगड़े को छोड़ो और वास्तविक बात क्या है, वह मुझे बताओ।

बेनी—खैर, जब आपकी यही इच्छा है तो सुनिये। मैं कल शाम को टहलता हुआ कामलता के मकान की ओर गया तो उसका कमरा बन्द पाया, कहीं वह बीमार तो नहीं है, यह खयाल होते ही दिल घबड़ाया, फिर तो मैं ऊपर चढ़ गया, वहाँ जाकर देखा कि कामलता बैठी रो रही है, उसकी खाला को बुलाया तो उन्होंने मेरे बहुत पूछने पर यह कह कि लड़की पागल होगयी है (जुगलबाबू) यानी आपने न जाने क्या जादू कर दिया है कि यह हर वक्त आपके लिये रोय करती है। मैंने भी अपनी आँखों देखा है। असल बात तो यह है कि वह आप पर मरती है। इसी लिये तो उसकी नायका उससे हर वक्त लड़ा करती है वह पैसा कमाने के

लिये मजबूर करती है, यह कामलता को नामंजूर है।

जुगल—ऐसी बात है तो क्या तुम मेरा एक काम कर दोगे ?

बेनी—कहिये।

जुगल—सुनो, तुम उसकी माँ को अभी जाकर समझा दो कि वह उसे सताना छोड़ दे और उसकी एवज में जिस क़दर दौलत की दरकार हो मुझसे ले लें।

बेनी—बस, इतनीसी बात है, तो मैं अभी जाकर सब ठीक किये देता हूँ। अभी से आम लोगों के लिये दरवाजा बन्द करा देता हूँ और आपके नामकी मुहर लगवा देता हूँ।

जुगल—तो क्या मैं विश्वास करूँ ?

बेनी—अवश्य।

जुगल—वचन दो।

बेनी—विश्वास कीजिये।

देकर जबान कौल फिर जायं वो हम नहीं।
जो दुःख पड़े पर काम न आयें वह हम नहीं॥
हम आपके पसीने पै लहू बहावेंगे।
गर दोस्ती में जान भी जाये तो ग़म नहीं॥

जुगल—शाबाश, मेरे प्यारे दोस्त शाबाश! तुमने मेरी आशाओं से भी अधिक कह सुनाया।

बेनी—ये मेरे बड़े सौभाग्य की बात है कि आप मुझे अपना सच्चा मित्र समझते हैं।

Taj Tahir Foundation

जुगल—अच्छा, यह सौ रुपये का नोट लो, इसे धीरे से कामलता को दे देना और उसकी माँ से नौकरी की बात भी तै कर लेना, फिर शामको आकर मुझसे मिलना मैं उसका उचित प्रबन्ध कर दूँगा।

बेनी—अच्छी बात है। पर मैं अभी न जाकर जरा देर में जाऊँ तो क्या कोई हर्ज है?

जुगल—क्यों क्या कोई आवश्यक कार्य्य से जाना है?

बेनी—हाँ, जरा एक आदमी के यहाँ तकाजे जाना है। क्योंकि कुछ रुपयों की जरूरत आ पड़ी है।

जुगल—कितने रुपये चाहियें?

बेनी—साठ रुपये उसके यहाँ बाकी हैं, और मेरा काम तो पचास में भी चल जायगा।

जुगल—तो यह लीजिये, अभी आप इससे अपना काम चलाइये, फिर दूसरे दिन वहाँ से ले आइयेगा।

बेनी—जी नहीं। आप कष्ट न कीजिये।

जुगल—भला इसमें कष्ट की कौनसी बात है।

बेनी—कुछ नहीं, पर मैं मित्रता में लेन-देन ठीक नहीं समझता।

जुगल—तो क्या आप मुझे कोई गैर समझते हैं। बेनीबाबू रुपया-पैसा तो हाथ का मैल है।

बेनी—दीजिये, आपके कहने पर लाचार हूँ। अच्छा, प्रणाम!

Taj Tahir Foundation

जुगल०—पहले निपटाइये मेरा काम ।

बेनी०—बहुत अच्छा, श्रीमान् ! (स्वतः)

इस तरह आता है रुपया बेपरिश्रम हाथ में ।
लग रहा हूँ इसी से धनपती के साथ में ॥
समय पाकर धन हड़पना है चालाकी का काम ।
मूर्ख हैं समझे बिना जो व्यर्थ खो देते हैं दाम ॥

Taj Tahir Foundation

पञ्चम दृश्य।

कामलता का मकान

काम०—हे भगवान ! यह क्या बात है, जो आज तीन दिन से उसने मुहँतक नहीं दिखाया, कहीं मैंने हार की लालच में पड़कर सोने का शिकार तो नहीं गँवाया। या बेनीबाबू ने उन्हें कुछ उलटा-सीधा तो नहीं पढ़ाया, मुझे यह भी शक होता है, कि कहीं वह अपनी स्त्री के मुहब्बत में तो गिरफ़्तार नहीं होगया। नहीं जी, यह सब तो मेरे झूठे ख्याल हैं। वह तो मेरे प्रेम-प्रदीप का पर्वाना हो रहा है, जा कहाँ सकता है ? खैर, जरा बुआ को बुलाकर उससे भी सलाह करलूँ, क्योंकि वह बुड्ढी हैं, ज़माना देखे हुई हैं, ज़रूर कोई उचित राय देंगी, लो वो तो इधर ही आ रही हैं।

(लालसा का आना)

लालसा—(आकर) ऐ बलैया लूँ बेटी, आज तू किस चिन्ता में है, जो अभीतक बाल भी नहीं बाँधा है, चल हाथ तो धो डाल, बाल बाँध ले। देख, शाम हो चली।

काम०—आज कुछ तबियत खराब है। आज बेनीबाबू आये थे, क्या तुमसे भी मिले थे ?

Taj Tahir Foundation

लालसा—मिले तो नहीं, मगर मैंने उनकी सब बातें सुन ली हैं ।

काम०—तो अब क्या करना चाहिये ?

लालसा—करना क्या चाहिये, सब्र और तरकीब । आज मैं तुझे एक तरकीब बताता हूँ, उसे काम में ला, अगर दाँव चल गया तो बस, भाग्य बदल गया ।

काम०—भला वो कौनसी तरकीब है ?

लालसा—सुन, (कान में कहना) हाँ, तो सब समझ गयी न ? अब तू उससे हरएक बात में प्यार जताना, जिससे यह मालूम हो, कि तू उसके बगैर थोड़ी देर भी नहीं रह सकती है, और मैं उसको चालबाज़ कहूँगी। बस, परीक्षा के बहाने जो चाहेगी, सब आसानी से हो जायेगा । देख, देख, वो इधर ही आरहा है । बना ढोंग, और जब रोने की ज़रूरत पड़े तो कान के फाहे से अँगुली छुआकर आँखमें लगा लेना ।

(जुगलकिशोर का आना)

काम०—तो क्या तुम यह चाहती हो, कि मैं मर जाऊँ ?

जुगल०—(स्वतः) हे भगवान ! यह क्या मामला है, कुछ समझ में नहीं आता ! जरा छिपकर सुनना चाहिये ।

(छिपकर दोनों की बातें सुनना)

लालसा—किसके लिये ? क्या उस मतलबी प्रेमी के लिये ?

काम०—देखो बुआ, अब जो कहा तो कहा, अगर अब

उन्हें कुछ भी कहोगी, तो बस, समझ लो कि अपनी कामलता से हाथ धो बैठोगी।

लालसा—बेटी ! तू तो पागल होगयी है ! तू अभी जानती नहीं, तमासबीन किसी के नहीं होते। जबतक जवानी है, तबतक चाह है, बस जहाँ बुढ़ौती आयगी, प्रेम और आमदनी की खिड़की बन्द हो जायगी। जब चेहरे पर शिकन पड़ जायगी, तो फिर तेरे प्रेमियों की आँखें भी बदल जायंगी।

जब तलक लावण्यता है तब तलक ही प्यार है।
तभी तक रुपयों की आती, कान में झंकार है॥
झुर्रियें मुख पर पड़ेंगी आयु जब ढल जायगी।
प्रेमियों के प्रेम की रस्सी तुरत जल जायगी॥
भरोसा है न अपनों का तू करती आस औरों की।
कभी देखी है सूखे फूल पर गुञ्जार भौरों की॥

काम०—कुछ ही क्यों न हो, पर मैं तो सिवाय उनके किसी से प्रेम नहीं कर सकती। मैंने माना, कि मेरे नये चाहनेवाले उनसे कहीं अधिक धनवान हैं, पर मैं अपने प्राणप्यारे हृदय-धन के सामने उन्हें कुछ भी नहीं समझती। इस लिये वो चाहे जैसा भी बर्ताव क्यों न करें, किन्तु मैं तो उन पर जान देने को तैयार हूँ।

लालसा—तो क्या तू मेरा कहा न मानेगी ?

काम०—मैं तो मानना चाहती हूँ, किन्तु हृदय नहीं

मानने देता ।

लालसा—क्यों नहीं मानने देता ?

काम०—इस लिये कि वो मुझे प्राण से भी अधिक प्यार करते हैं ।

लालसा—ये सब झूठी बातें हैं, बेटी ! ये प्रेम दर्शना तमाशबीनों की बातें हैं ।

काम०—तो तुम्हें विश्वास नहीं होता ?

लालसा—कदापि नहीं । हाँ, यदि उसकी कुछ परीक्षा लेकर दिखा दे, तो मैं कुछ न बोलूँगी । फिर जो तेरा जी चाहे करना ।

काम०—क्या परीक्षा लेना चाहती हो ?

लालसा—उससे कह, कि वो अपनी समस्त सम्पत्ति तेरे नाम लिख दे और अपनी स्त्री से कोई सम्बन्ध न रक्खे ।

काम०—मैं ऐसा कदापि नहीं चाहती ।

लाससा—क्यों ?

काम०—मैं उनकी सम्पत्ति लेकर क्या करूँगी ? और उनको स्त्री को उनसे क्यों छुड़ाऊँगी ? हाँ, यदि वो कहें तो मैं अपनी सारी सम्पत्ति उनको देने के लिये तैयार हूँ ।

लालसा—तू तो पागल होगयी है । मैं उनकी सम्पत्ति को ले लेना थोड़े ही चाहती हूँ । मैं तो केवल उनकी परीक्षा लेना चाहती हूँ । क्योंकि पुरुषों को धन और स्त्री, ये दो ही चीज़ प्यारी होती हैं । यदि उसने तेरे लिये इन दोनों

Taj Tahir Foundation

चीज़ों की पर्वाह भी न की, तो मैं समझ लूँगी कि वो तेरा सच्चा प्रेमी है और उसके दिल में तेरा प्यार है। दूसरे तेरे नाम सम्पत्ति लिख देने से, समस्त सम्पत्ति भी डिगरीदारों के हाथ से बच जायगी, और मेरे मन को भी शान्ति मिल यायगी।

काम०—बुआ! तुम कुछ भी क्यों न कहो, किन्तु मैं उनसे ये सब बातें कभी न कहूँगी और उनके प्रेम को भी न तोड़ूँगी, और यदि इसके लिये तुमसे ज्यादा सतायी जाऊँगी, तो याद रक्खो, मैं ज़हर खाकर मर जाऊँगी।

लालसा—खैर, अगर तू मेरी बात नहीं मानती, तो मर, चाहे जी! आज से मैं तुझसे न बोलूँगी।

(लालसा का जाना, कामलता रोती है, जुगलकिशोर सामने आते हैं)

जुगल०—प्यारी कामलता!

काम०—मुझसे दूर रहो, व्यर्थ दुःख न दो।

जुगल०...क्यों, क्या आज मुझसे नाराज़ हो? हाँ, समझा, यदि तुम हार के लिये नाराज़ हो, तो लो, मैं हार ले आया हूँ।

(हार देना, कामलता का लेकर फेंक देना)

काम०—हटाव जी, हार लेकर क्या करूँगी। यदि मैं जानती कि आप तीन दिन तक मुहँ न दिखायेंगे, तो मैं हार के लिये कहती भी नहीं। यहाँ तो न जाने क्या जान

Taj Tahir Foundation

पर बीतती है, कहाँ, तुम्हें चैन की सूझती है।

जुगल०—मैं जानता हूँ, कि तुम मेरे लिये अपनी माँ को आँखों में काँटा हो रही हो। मगर मैं—

तुम्हारी बुआ के मन को उलट दूँगा।
ग्रीष्म को पावस से पलट दूँगा॥

काम०—(शराब देकर) खैर लो, इसे पीकर देखो कैसी अच्छी शराब है।

जुगल०—थोड़ी तुम भी पीओ।

(दोनों शराब पीते हैं)

काम०—(रोकर) अच्छा, तो अब मैं तुमसे सदा के लिये आज बिदा होती हूँ।

जुगल०—क्यों, मेरा अपराध ?

काम०—यह सब है मेरे फूटे हुए भाग्य की बात।

जुगल०—प्यारी कामलता! ऐसा न कहो। मैं तुम्हारे बिना एक क्षण भी नहीं जी सकता। मैं जानता हूँ, कि तुम्हारी बुआ तुम्हें सदैव तंग किया करती हैं। मगर मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ, तुम्हारी बुआ को शरमाने और तुम्हें खुश करने के लिये मैं जो कुछ वह चाहती हैं, सब कर दूँगा, और तो क्या—

जो तुम्हारी खुशी के लिये देना हो मुझको जान भी।
खुशी से दे दूँगा, माँगे वो जो मेरा प्राण भी॥
आज्ञा दो तो मैं फेंक दूँ सर काट कर।

धाम, धन, सन्तान सब कुछ है निछावर आप पर ॥
किस लिये तुम हो दुःखी जबतक हूँ मैं संसार में ॥
धर्म कर्म औ शर्म दे डाला है तुमको प्यार में ॥

काम०—अजी छोड़ो इस झगड़े को । लेव शराब पीकर जरा जी बहलाओ और इस पचड़े को भूल जाओ, और सुनो मेरे दर्द दिल की कहानी सुनो ।

* गाना *

मेरे मनहर प्रीतम प्यारे, तुम हो नयनों के तारे ।
इस जीवन के सर्वस्व तुम्हीं हो, मेरे प्राण अधारे ॥
जुगल०—भोली सूरत पर तेरी बिका हूँ ।
जग से मैं नाता तोड़ चुका हूँ ॥
काम०—प्यारे मैं हूँ प्रेम को प्यासी ।
और मैं तुम्हारे पग की दासी ॥
तुमही हो सुख सम्पति मेरे ।
हृदयेश्वर प्रिय प्यारे ॥ मेरे० ॥

(गाते गाते दोनों का प्रस्थान)

Taj Tahir Foundation

षष्ठम दृश्य

जुगल किशोर का भवन

(मनोहर के साथ सरोजिनी का प्रवेश)

मनो०—बहिन सरोजिनी ! आज तुम्हें वह भयानक समाचार सुनाने के लिये आया हूँ, जिसके स्मरणमात्र से पिशाचों का कलेजा भी काँप उठता है। पर क्या करूँ, लाचार हूँ कि तुम्हें वह समाचार सुनाना अत्यावश्यक है।

सरो०—कहो भैया, क्या कहना चाहते हो ? कहो, शीघ्र कहो। मेरे प्राणपति तो सकुशल हैं न ?

मनो०—यों शरीर से तो कुशल ही हैं, पर कुशल, आनन्द और शान्ति तो उसी दिन से उनसे दूर होयगी है, जिस दिन से उन्होंने बेनीबाबू को अपना मित्र बनाया, तथा जिस दिन उनका पैर कामलता वेश्या के घर में गया, उसी दिन इस घर से कुशल ने किनारा कर लिया।

सरो०—तो फिर और कौनसी भयानक बात कहना चाहते हो ?

मनो०—यही कि अब उनमें विचार-शक्ति का लेश भी नहीं है। कामलता के प्रेम में उनकी आँख बन्द है। रण्डीबाज़ी के चक्र में पड़ने से भाग्य मन्द है।

Taj Tahir Foundation

सरो०—इसे तो मैं भी जानती हूँ, परन्तु जब वह आप ही नहीं समझते तो फिर मैं क्या कर सकती हूँ।

मनो०—अब कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। वर्ना यह घर जो बड़े लोगों की निशानी बच गयी है, यह भी शेष हुआ चाहता है।

सरो०—यानी ?

मनो०—यही कि उन्होंने यह मकान और अपनी सारी जायदाद कामलता के नाम लिख दिया है, जिसको आज रजिष्ट्री होनेवाली है।

सरो०—क्या सच कहते हो ?

मनो०—हाँ मुझे अभी इस बातकी पक्की खबर मिली है।

सरो०—हे परमेश्वर !

मनो०—ठहरो, ठहरो, घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं है। हिम्मत धरो और सब्र करो। जबतक तुम्हारा भाई मनोहर जीवित है, तुम्हें दुःख करने की कोई आवश्यकता नहीं है। देखो, मैंने वकील साहब की राय लेकर यह दरख्वास्त लिख लिया है। तुम सोहन की वली बनकर इस पर दस्तखत कर दो, फिर देखा जायगा। यह जायदाद कुछ उनकी निजी पैदा की हुई जायदाद नहीं है। बल्कि मौरूसी है, इससे सोहन के रहते, उन्हें किसी को वसीयत करने वा देने का कोई अधिकार नहीं है।

सरो०—तो क्या तुम अदालत में उनके विरुद्ध मुझे खड़ी

Taj Tahir Foundation

करना चाहते हो ? नहीं, यह काम मुझसे न होगा, और तुम भी ऐसे विचारों से दूर रहो।

मनो०—तो क्या सोहन का जीवन नष्ट होने दूं ? उसे मार्ग का भिक्षुक बनने दूं और चुपचाप देखा करूँ ?

सरो०—हाँ, देखा करो और चुप रहो। भला तुम्हीं सोचो, क्या सच्चे मित्र और अर्धाङ्गिनी नारी का क्या यही कर्त्तव्य है कि अपने मित्र तथा अपने स्वामी के साथ अदालत लड़ें और उसे अपमानित करें ? चाहे कुछ ही क्यों न हो किन्तु मैं उनकी बातमें बट्टा न लगने दूँगी। मैं कष्ट सह लूँगी पर उनका हृदय न दुखाऊँगी।

मनो०—उनकी बात में क्योंकर बट्टा लगेगा और उनका मन किस लिये दुखेगा ?

Taj Tahir Foundation

सरो०—क्यों ? जिस सम्पत्ति को वो अपनी समझते हैं, उसे तुम सोहन की बनाना चाहते हो, क्या यह उनके लिये कम दुःख की बात होगी। भाई मनोहर ! तुम सोहन के लिये क्यों घबड़ाते हो, अगर तुम उसे एक रोटी का टुकड़ा दे सको तो उसका पेट भर जायगा। क्या सोहन तुम्हारा बेटा नहीं है ?

(जुगलकिशोर और कामलता का आना और छिपकर दोनों की बातें सुनना)

जुगल—(स्वतः) हैं, यह मैं क्या सुनता हूँ। हे परमेश्वर ! यह क्या मामला है !

काम०—(जुगल से) जरूर कुछ दाल में काला है। देखो, देखो, पाजी किस तरह तुम्हारी स्त्री को भड़का रहा है। क्या यही तुम्हारा सच्चा मित्र है ?

सरो०—भाई मनोहर, तुम व्यर्थ दुःखित होते हो। यह सम्पत्ति तो क्या, यदि वो चाहें तो मेरा और मेरे इस छोटे बच्चे का शीश भी काटकर जिसे इच्छा हो प्रसन्नता से दे सकते हैं। जब कि मैं और सोहन दोनों ही उनके हैं, तो जो कुछ हमलोगों का है, उनका है।

धन तो क्या इस देह पर भी उनका पूर्ण अधिकार है।
उनके बिना मेरे लिये सूना सकल संसार है ॥
घर तो क्या सर भी मेरा बेच दें बाजार में।
वो हैं तो सब कुछ है वरना कुछ नहीं संसार में ॥

मनो०—किन्तु बहिन सरोजिनी ! अब तो वह दूसरे का हुआ चाहता है।

जुगल०—(मनोहर को धक्का देकर) चुप ओ धोखेबाज !

मनो०—मैं नहीं यह है।

(कामलता की ओर इशारा करते हुए)

मित्र समझे हो वह शत्रु है तुम्हारे जान की।
काम लो बुद्धि से संगत छोड़ इस नाकाम की ॥
हो चतुर करते हो क्यों बात तुम अज्ञान की।
क्यों बली करते हो अपने हाथ से निज मान की ॥

जुगल—बस, बस, अब अधिक न बोल। अपने मरने

के लिये अपने हाथ से विष न घोल।

जल जिसे समझा, जब कि जल ही आग है।
काटता है पालनेवाले को वो तू नाग है॥

मनो०—यह तुम कहते हो।

जुगल—हाँ, हाँ, मैं कहता हूँ। जो आँखों देखा और कानों सुना वही कहता हूँ। बोल क्या अभी तू सरोजिनी को नहीं बहकाता था? क्या मैंने नहीं सुना? बता जब तुझसे और सरोजिनी से कोई सम्बन्ध न था, तो तुझे उसे बहकाने का क्या अधिकार था?

मनो०—मित्र जुगल! मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि सरोजिनी को मैं बहिन समझता हूँ और आपको बड़ा भाई! इसीसे आपकी जायदाद बचाने के लिये उसे समझाता था, और आपको भी समझता हूँ कि इस धोखेबाज रण्डी के फेर में अपने को बरबाद न करो।

कामलता—जुगलबाबू! क्या तुम मुझे इसी लिये अपने साथ लिवा लाये हो कि तुम्हारी भोजन की थाली से गिरे हुए जूठे टुकड़ों से पेट भरने वाले कुत्ते मेरा अपमान करें? मैं आपकी हूँ, आपका नमक खाती हूँ, आप जो चाहें कह सकते हैं। मगर मैंने इनके बापकी क्या बेईमानी की है जो इन्होंने मुझे बेईमान कह दिया? क्या यही आपकी मुहब्बत है? जो आपके सामने कोई मुझे गाली दे और आप चुपचाप खड़े रहें?

Taj Tahir Foundation

जुगल—मनोहर! अब यदि अपना भला चाहते हो तो बगैर एक शब्द बोले मकान से बाहर निकल जाओ। अब यदि कभी भी इस घरमें मुहँ दिखाओगे तो नौकरों से गरदनियाँ दिलवा कर निकाल दिये जाओगे।

सरो०—मेरे प्यारे! आज आप यह क्या कह रहे हैं?

जुगल—दूर खड़ी रह बदमाश!

मनो०—खैर भाई मैं जाता हूँ, पर याद रक्खो, तुम पीछे पछताओगे और आज की कार्रवाई से सदैव शर्माओगे।

जुगल—यह धमकी किसी और को बाहर जाकर सुना, बोल जाता है या दरवान को बुलाऊँ?

मनो०—जाता हूँ भाई जाता हूँ। बहन सब्र करो, न रो अच्छा भाई प्रणाम!

कामलता—निकल मुए बदलगाम!

मनो०—चुप ओ मक्कार!

जुगल—दूर हो बदकार!

(जुगलकिशोर मनोहर को धक्के देकर मकान से बाहर निकाल देता है। बेनीबाबू लालसा को साथ लेकर आते हैं। सरोजिनी बेनीबाबू को देखकर अन्दर जाना चाहती है। जुगलकिशोर डपट कर रोकता है सरोजिनी शिर नीचा कर खड़ी रह जाती है।)

जुगल—कहिये बेनीबाबू! अब तो सब दखल होगया।

Taj Tahir Foundation

मैं समझता हूँ अब तो (लालसा की तरफ इशारा करके) बाईजी को मेरे प्रेम का विश्वास होगया होगा ?

बेनो—(जुगल को अलग ले जाकर) विश्वास तो हो गया पर वह कहती हैं कि जबतक सरोजिनी घर में उपस्थित है तबतक दखल हो गया, यह कैसे समझ लिया जाय।

जुगल—तो क्या मैं सरोजिनी को घर से निकाल दूं ? लोग मुझे क्या कहेंगे ?

कामलता—(आकर) नहीं नहीं प्यारे ! कोई जरूरत नहीं। यह तो केवल बुआ को आपकी परीक्षा लेना था सो होगया। (गले में हाथ डालकर) मेरे प्यारे ! आप किसी बात का ख्याल न करें। यह सब तो केवल उनको यकीन दिलाने के लिये दिल्लगी थी और यों तो मैं और यह सब आप ही का है।

जुगल—यह तो मुझे विश्वास है। और तुम जैसी रंडी के प्रेमी होने का अभिमान है।

बेनी—(स्वतः) पर कुछ दिन के बाद अभिमान काफूर हो जायगा और सारा अभिमान चूर हो जायगा।

काम०—तो क्या तुमने मुझे निरी रंडी ही समझ रक्खा है। नहीं ऐसा न समझो, मैं तुम्हारी भोली सूरत पर न्योछावर हो चुकी हूँ। और मैं तुमको हृदय से चाहती हूं। यही कारण है कि मैंने आपके जैसे सच्चे आशिक को पाया है। फिर प्रेम

के सामने धन-भवन क्या चीज है।

थूक जब देता है प्रेमी धर्म कर्म और नेम पर।
मर नहीं सकता वो धन पर जो है मरता प्रेम पर॥

लालसा—कहो बेटी! क्या दखलदियानी होगयी?

काम०—हाँ, सब तो दखल होगया अब बाकी ही क्या है?

लालसा—क्यों, अभी घर की मालकिनी तो यहीं है। मैं पहले ही कहती थी कि बिवाहिता स्त्री का प्रेम बड़ा मजबूत होता है।

काम०—बुआ तुम तो पागल होगयी हो। क्या अभी तुम्हारी परीक्षा पूरी नहीं हुई?

लालसा—सब कुछ हुआ तो क्या? पर खास सवाल में तेरा प्रेमी फेल होगया।

बेनी०—(जुगल से) मित्र! चन्द मिनट के लिये सरोजिनी को इस घर से बाहर, यानी कमरे से बाहर कर दीजिये फिर उन्हें विश्वास हो जायगा, तब बुला लीजियेगा। इससे दो काम होगा। एक तो बुड्ढी को तुम्हारे सच्चे प्रेम का विश्वास हो जायगा। दूसरे सरोजिनी की परीक्षा कर देखिये, कि वह कहाँ तक आपको प्यार करती है और आपकी आज्ञा कहाँ तक मानती है।

जुगल—नहीं, यह मुझसे नहीं हो सकता है।

बेनी०—क्यों क्या सारी मिर्चा खाकर डाँड़ी के वक्त घब-

Taj Tahir Foundation

ड़ाते हो ? सदैव के लिये तो निकालता नहीं। देखो कामलता को उसकी माँ के सामने न लजाव। वह बिचारी तुम्हें प्राणों से भी अधिक चाहती है। यह तो बात की बात पड़ गयी। वर्ना वह ऐसा कभी न होने देती। देखो, यदि वह बुड्ढी के सामने नीचा देख पायगी तो अनी के बदले कनी खाकर मर जायगी।

जुगल—ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं उसके लिये सब कुछ करने को तैयार हूँ।

बेनी—वाहरे मेरे बुद्धिमान मित्र ! (स्वतः) बस, अब कहाँ जाता है। अब थोड़ी ही देर में इसे फटकार बताता हूँ और आप कामलता से चहारम लेकर मालदार बन जाता हूँ।

जुगल—सरोजिनी, इधर आओ और सुनो। तुम जानती हो इस वक्त मैं तुमसे क्या चाहता हूँ ? तुम सती हो, सीधी हो, दमयन्ती सी पति-भक्त्या और शैव्या सी पति की आज्ञा पर मर मिटनेवाली नारी-रत्न हो। बोलो, इस समय तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है ?

सरोजिनी—केवल आपकी आज्ञा पर चलना ही मेरा धर्म और कर्त्तव्य है।

सती पति-भक्ति से हट सकती नहीं पा त्राण भी।
आपकी आज्ञा पर न्योछावर है तन मन प्राण भी॥

जुगल—तो मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि अभी इस घर से बाहर चली जा।

सरोजिनी—हैं! यह आप क्या कह रहे हैं? विवाह के समय अग्नि, ब्राह्मण और देवताओं को साक्षी देकर क्या यही प्रतिज्ञा की थी?

जुगल—क्या प्रतिज्ञा की थी?

सरोजिनी—स्मरण नहीं है? अच्छा सुनो—

था प्रण ये तेरा साथ न छोड़ेंगे कभी भी।
पति-पत्नि का सम्बन्ध न तोड़ेंगे कभी भी॥
इस प्रेम की डोरी को न छोड़ेंगे कभी भी।
मुहँ तेरी मुहब्बत से न मोड़ेंगे कभी भी॥
वह प्रण है कहाँ और वह एकरार कहाँ है।
बतलाइये स्वामी वो मेरा प्यार कहाँ है॥

जुगल—वहाँ, जहाँ मेरा हृदय है। अज्ञान स्त्री! पहले तू अपने उस वचन को याद कर, जो तूने अभी कहे थे, कि जो मैं कहूँगा वह तुझे स्वीकार है। फिर ये तेरा व्यर्थ का तकरार है।

सरोजिनी—नहीं, नहीं, मेरे स्वामी! मैं तकरार नहीं करती और न तकरार करने की हिम्मत ही कर सकती हूँ। मैं तो केवल आपसे दया और प्रेम की भीख माँगती हूँ।

जुगल—दया मुझ निर्दयी के पास नहीं है।

सरोजिनी—नहीं मेरे प्यारे! ऐसा न कहो। जिस बात को मनुष्य तो क्या शैतान भी नहीं कह सकता है, उसे न कहो। मैं और कुछ नहीं चाहती, केवल दो मुट्ठी चना, और

रहने के लिये चार गज पृथ्वी पा, मैं आपलोगों की सेवा में आराम से रहूँगी।

जुगल—सरोजिनी! मैं नहीं चाहता कि कोई नौकर तेरे गले को हाथ लगाये। इससे अच्छा है कि तू बिना एक शब्द बोले, इस मकान से बाहर चली जा।

सरोजिनी—(कामलता से) बहिन! तुम्हीं दया करो। मुझे आज्ञा दो कि मैं तुम्हारी सेविका बनकर इस घरके एक कोनेमें रह सकूँ।

इन्हें कुछ मेरा ध्यान नहीं तो, तुम्हीं दया कर दो मुझपर।
सहूँगी सब कुछ ये देख मुखड़ा, पड़े जो संकट हजार सरपर॥
समझ लूँगी धन्य हैं भाग्य मेरे, जुगल जोड़ीके चरणमें रहकर।
दुःखो न होगा सतीका जीवन, पती चरणमें विपत्ति सहकर॥

कामलता—उहँ! तुझे घरमें रहने दूँ। नहीं ऐसा कदापि नहीं कर सकती। दूर हो मक्कार! यहाँ तेरी करुणा न चल सकेगी। जो भीख तू माँगती है, वह कभी नहीं मिल सकेगी।

सरोजिनी—हे परमात्मा! अब मैं क्या करूँगी? कहाँ जाऊँ?

जुगल—नर्क में! कोई है, इस मक्कार औरत को घर से बाहर निकाल दो।

(एक नौकर आता है देखकर कोने में खड़ा रह जाता है)

सरोजिनी—नहीं इससे पहले मेरा शीश काटकर आपके चरणों पर धर दो।

Taj Tahir Foundation

सोहन—(आकर) पिताजी !

जुगल—चुप पाजो !

सरोजिनी—प्राणनाथ !

जुगल—छोड़ दे मेरा हाथ।

(सरोजिनी हाथ धरकर रोती है। जुगल हाथ झटक देता है, वह पैरपर गिरती है, जुगल ठोकर मारता है। सोहन रोना है, कामलता जुगलकिशोर के गले में हाथ डालकर प्रसन्न होती है और सब लोग हँसते हुए बाहर चले जाते हैं।)

Taj Tahir Foundation

पर्दा

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

रास्ता

(वेनीबाबू का सरोजिनी के प्रेम में पागल दिखायी देना)

गाना

हम सर फरोश कूचये कातिल को ढूँढते हैं ।
दिल है मुकाम उनका हम दिल को ढूँढते हैं ॥
फिरते हैं उस गली में जब पूछता है कोई ।
कहते हैं गिर पड़ा है हम दिल को ढूँढते हैं ॥
इस इश्क के कूचे में हम खोगये हैं दोनों ।
दिल हमको ढूँढता है हम दिल को ढूँढते हैं ॥
जब से सुना है मरने का नाम जिन्दगी है ।
सर से कफन लपेटे कातिल को ढूँढते हैं ॥
कह दो अभी न खोलें जन्नत को बागे खिजाँ ।
लैला की जुस्तजू में महेमिल को ढूँढते हैं ॥

बस, अब सन्तोष नहीं होता है । मन को जितना

Taj Tahir Foundation

समझाता हूँ, वह उतना ही अधिक मचलता है। जितना खींचना चाहता हूँ, वह उतना ही उस सुरसुन्दरी की ओर वेग से बढ़ता है। सरोजिनी ! सरोजिनी !! तूने इतनी रूप-राशि कहाँ से पायी है ? अहा ! तेरी—

काली काली आली अलकें भ्रमरों की भीर सी सुन्दर हैं।
तेरी जुग जुड़ी भौंहें मनमथ के धनु से बढ़कर हैं॥
गोरे गोरे गालों पर तेरे गुलाब की सी लाली है।
मुख कान महान है मोहनी मंत्र से रूप की छटा निराली है॥
जब से देखा है तुझे तेरे मिलने को जी ललचाता है।
चित चैन नहीं पाता तब लों जब लों यह तुझे न पाता है॥

(कालिन्दी कुटनी का आना)

कालिन्दी—कहो बेनीबाबू ! किस विचार में पड़े हो ? पागलों की भाँति रास्ते में क्यों खड़े हो ?

बेनी—कौन कालिन्दी, तू आगयी ! ओह, मैं घण्टों से खड़ा खड़ा तेरी राह देख रहा था।

कालिन्दी—कहो क्या हुकुम है ?

बेनी—कालिन्दी ! तू जुगलबाबू की स्त्री सरोजिनी को जानती है ?

कालिन्दी—क्यों नहीं जानती बेनीबाबू ! भला ऐसी कौन सी सुन्दरी स्त्री इस कलकत्ते में है जिसे यह कालिन्दी नहीं जानती। पर उससे आपको क्या काम है ?

बेनी—यह बेनी उसी की बेणी में कैद हो रहा है।

मिला दे मुझसे गर उसको तो मुहँ माँगा तुझे दूँगा।
तुझे खुशहाल कर दूँगा जो एक दिन उससे मिल लूँगा॥

कालिन्दी—पर यह जरा टेढ़ी खीर है, बेनीबाबू! वह बड़े कड़े स्वभाव की औरत है। उसका हाथ आना मामूली काम नहीं है।

बेनी—पर तुम्हारे लिये ये कुछ बड़ी बात नहीं है।

कालिन्दी—यह तुम कहते हो, मैं नहीं कह सकती।

बेनी—अच्छा तो फिर जो मैं कहता हूँ वही करो। अगर तुम्हारी बुद्धि काम नहीं करती तो मेरे बताये रास्ते पर चलो।

कालिन्दी—कहो क्या करना होगा?

बेनी—सुनो, वह इस समय बड़े दुःख में है, उसके पति ने उसे घर से निकाल दिया है।

कालिन्दी—हाँ यह तो मैं भी जानती हूँ।

बेनी—और वह उस विलासी जुगल के लिये बेचैन है।

कालिन्दी—यह भी ठीक है।

बेनी—मैं साधू का स्वाँग भरता हूँ, तुम उसे यंत्र-मंत्र का महातम सुना कर मेरे पास तक ले आओ।

कालिन्दी—शायद ऐसा हो सके। पर इससे आप क्या कर सकते हैं?

बेनी—सब कुछ। बोलो तुम इतना तो कर सकती हो?

कालिन्दी—कोशिश करूँगी। पर इनाम?

बेनी—जो कहो।

Taj Tahir Foundation

कालिन्दी—सौ रुपया।

बेनी—मंजूर है।

कालिन्दी—तो लाव आधा पेशगी दे दो।

बेनी—काम तो करो, ले लेना।

कालिन्दी—मैं ऐसी फालतू नहीं हूँ। अगर काम कराना हो तो पचास पहले गिन दो, नहीं तो अपना रास्ता लो।

बेनी—(पचास रुपया देकर) अच्छा लो। पर कबतक यह काम कर दोगी ?

कालिन्दी—एक अठवारे में।

बेनी—अच्छा जाव और अभी से अपना जाल बिछाव।

कालिन्दी—जो हुकुम सरकार !

बेनी—आव, मैं तुम्हें वह स्थान दिखा दूँ जहाँ लाना होगा।

कालिन्दी—चलिये।

(दोनों का जाना)

Taj Tahir Foundation

द्वितीय दृश्य

मनोहर का मकान

(सरोजिनी का ईश्वर की प्रार्थना में मग्न दिखायी देना)

* गाना *

दीनबन्धु दुःख टारो !
उबारो भवसागर महँ भयके भँवर सों मोहे करुणाके करसे ।
बेबसी है ! नारी नैया आन फँसी है ।
खेवैया हो मतवाला,
तज गया प्रेम पतवार ॥
अगम अपार संसार धार मँझधार ॥ सों उबारो दीन०—

भगवान ! तुम्हारी कृपा की चिरकृतज्ञ हूँ । जो डूबते को तिनके का सहारा मिला । परन्तु मुझे मेरी चिन्ता नहीं है । यदि चिन्ता है तो वह प्राणनाथ की है । जो बेकल हृदय को एक पल के लिये भी कल नहीं लेने देती है । बचाओ, बचाओ, भगवान ! एक अबला के लाज-जहाज की रक्षा के लिये मेरे प्राणनाथ को वेश्या के विष से बचाओ । दिखाओ दीनबन्धु, कोई अद्भुत चमत्कार दिखाओ ।

Taj Tahir Foundation

विल्वमंगल को बचाया जैसे वेश्या जाल से।
त्यों बचाओ मेरे प्रीतम को प्रभू इस काल से॥
नाथ को मेरे सुधारो आन्तरिक उपदेश से।
अब करो रक्षा पिता अकुला गयी हूँ क्लेश से॥

मनोहर—बहिन सरोजिनी! क्या कर रही हो?

सरोजिनी—अपने भाग्य पर रो रही हूँ।

हृदय में हर समय उस मूर्ति का खोज होता है।
निकल जाने से आँसू दिल का हलका बोझ होता है॥

मनोहर—धैर्य्य धरो बहिन, धैर्य्य धरो। वह समय समीप है जब कि वो वेश्या-रूपी मकड़ी के जाल से निकल कर सतीत्व की शीतल छाया में विश्राम ढूँढ़ने के लिये तुम्हारे पास आयेंगे।

शीघ्र ही पछतायँगे वह सोच कर निज कर्म को।
देखेंगे जब प्रीत रण्डी और नारी धर्म को॥

सरोजिनी—उसी समय की आशा में प्राण धरे हूँ, नहीं तो जय भाग्य ने उन्हीं को मुझसे पृथक् कर रक्खा है तो फिर अब अपने लिये संसार में और क्या है।

अच्छे रहें वो विश्व में जहाँ कहीं रहें।
रक्खूँगी प्राण किस लिये जब वे नहीं रहें॥

मनोहर—बहिन सरोजिनी! इस भाँति अधीर न हो। जैसे इतने दिन शान्ति से बिताया है, वैसे थोड़े दिन और संतोष करो। मैं रात दिन उन्हीं की खोज में चिन्तित रहता

Taj Tahir Foundation

हूँ और उनकी प्रत्येक बातों का हर समय पता लगाता रहता हूँ। अब लोभी वेश्या को इस बात का पता चल गया है कि इन तिलों में तेल नहीं है, और उसका प्रेम पैसे का प्रेम है, हृदय का मेल नहीं है। इस लिये उस दिन को समीप ही समझो, जब कि वह परीक्षा की अग्नि पर पड़ते ही मुलम्मे को उड़ते हुए देखेंगे और सत्य के लिये आतुर होकर रो देंगे।

सरोजिनी—देखूँ भाग्य कबतक उनकी चरणसेवा से पृथक रखता है। आह! संकटों की बर्सात और दुःखों के समुद्र एक साथ उमड़ पड़े। पति का प्रेम बहते पानी की भाँति बह गया। लक्ष्मी लापता होगयीं और मुझ अनाथिनी के लिये केवल रोना रह गया। मनोहर! यदि उस दिन मेरे प्राणनाथ से अपमान सहकर भी तुम द्वार पर न खड़े रहते, तो मेरा क्या परिणाम होता?

मनोहर—पर मैं खड़ा क्यों न रहता। मैं तो जानता ही था कि आज यह होनेवाला है। पर याद रक्खो, जैसे उस दिन उन्होंने निर्दयता का परिचय दिया है उसी भाँति उन्हें भी वेश्यालय से निकल जाने का परवाना मिलनेवाला है।

न होता प्रेम, धन का वेश्या का प्यार होता है।
पती होता नहीं प्राणी, द्रव्य उनका यार होता है॥
महा मतिमन्द है ऊसर में जो जा बीज बोता है।
वो जाकर लाभ की लालच में पूँजी घर की खोता है॥
प्रेम मधु-मक्खी का तबतक, रस है जबतक फूल में।

Taj Tahir Foundation

ये न होंगी रस-रहित जब गुल मिलेगा धूल में॥

दासी—(आकर) श्रीमान् ! बाहर रामचरन नौकर आपका इन्तेजार कर रहा है।

मनोहर—ठहरने को कहो आता हूँ।

दासी—जो आज्ञा !

मनोहर—अच्छा अब मैं जाता हूँ और राजचरन से जो नई खबर मिलती है, उसे आकर तुम्हें सुनाता हूँ।

सरोजिनी—पर यह रामचरन कौन है ?

मनोहर—कामलता का नौकर। मैंने इसे कुछ महीना देने की लालच दिखाकर फाँस रक्खा है। उससे कह दिया है, मैं कामलता पर मरता हूँ, जुगल हर समय वहीं रहता है, इस लिये वहाँ जाने से हिचकता हूँ। इसी लिये रामचरन धन के लोभ में जब कोई नई बात होती है तो तुरन्त ही मुझसे कह जाता है। वह भी चाहता है कि जुगलबाबू वहाँ से हटें, बाहरी लोग आयँ-जायँ तो नौकर को भी पैसा मिले।

सरोजिनी—मनोहर, जीवन भर तुम्हारी सहायता और सहानुभूति के भार से मैं मुक्त नहीं हो सकती। जाव और उनका पता लगाव।

मनोहर—बहुत अच्छा। (जाना)

सरोजिनी—आह ! जब बुरा समय आता है, तब प्राणी अपने उपकारी को अत्याचारी जानने लगता है। उस समय वह नहीं समझता है कि मेरा मित्र कौन है और शत्रु कौन है।

दे दिया सम्पत्ति सारी वेश्या को प्यार कर ।
नारि को घर से निकाला व्यर्थ ठोकर मार कर ॥
शत्रु समझा था जिसे रक्षक है उनके मान का ।
मित्र समझा था जिसे ग्राहक है उनके जान का ॥

कालिन्दी—(आकर) बहिन सरोजिनी प्रणाम !

सरोजिनी—कौन कालिन्दी, कहो उन्होंने क्या किया ? मेरे भाग्य का क्या निर्णय हुआ ?

कालिन्दी—क्या कहूँ, तुम वहाँ तक चल नहीं सकती हो और वह यहाँ तक आने ही क्यों लगे हैं। क्योंकि उन्हें धन की तो जरूरत है नहीं। वह तो सच्चे त्यागी, परम शान्तिवान साधू हैं । जब वह किसी से कुछ लेते-देते नहीं, तब कहीं जाने क्यों लगे।

सरोजिनी—तब ?

कालिन्दी—तब क्या चलो। यदि अपने प्राणपति को अपने काबू में करना चाहती हो तो वहाँ तक चली चलो। फिर साधू महात्माओं से लज्जा कैसी ? उनके लिये तो सारे संसार की स्त्री, माँ बहिन के समान हैं । फिर मैं साथ चलने को तो तैयार ही हूँ।

सरोजिनी—अच्छा तो कब चलना होगा ?

कालिन्दी—अवकाश हो तो अभी ही चलो। आज मंगल, दिन० भी अच्छा है। बस जहाँ तुमने उन्हें अपना दुःख सुनाया कि उन्हें तुम पर तरस आया। बस, मैंने हाथ जोड़

Taj Tahir Foundation

कर उन्हें गरज सुनाया, यंत्र लिखाया कि तुम्हारा दुःख नसाया।

सरोजिनी—क्या ऐसी बात है?

कालिन्दी—नहीं तो क्या योंही उनके द्वार पर लोगों की भीड़ लगी रहती है। अरे! धन-धाम बेटा-बेटी तो उन्होंने कितनों को दिये हैं।

जो गया रोता वो आया हँसता उनके द्वार से।
याने उनको ब्रह्म-शक्ति है मिलो करतार से॥

सरोजिनी—तो फिर चलो मैं भी चलती हूं, देखूँ भाग्य क्या दिखाता है।

कालिन्दी—(चलते चलते स्वतः) अशर्फियों की थैली।

कान के परदे फटेंगे द्रव्य की झनकार से।
धर्म की होवेगी हत्या पाप की तलवार से॥

(सरोजिनी और कालिन्दी का जाना)

Taj Tahir Foundation

तृतीय दृश्य

जंगल में कुटी

(बेनीबाबू साधू के वेष में बैठे हैं, कालिन्दी के साथ सरोजिनी आती है)

कालिन्दी—देखो यही वह साधू महाराज हैं, जिनकी कृपा दृष्टि से आपका उद्धार है ।

सरोजिनी—महाराज प्रणाम !

बेनी—सौभाग्यवती हो माई !

कालिन्दी—महाराज, यह दुःखिनी नारी आपकी शरण में आयी है, इस पर कृपा करिये और इस अनाथिनी का दुःख हरिये ।

बेनी—हाँ इसका दुःख शीघ्र ही नष्ट हो जायगा । माता तुम्हारा पति किसी वेश्या के प्रेम में पड़, तुम्हें भूल गया है । पर अब वह शीघ्र ही उसके प्रेम-पाश से मुक्ति पा जायगा और तुम्हें अपनायगा ।

सरोजिनी—बाबाजी तो सब जानते हैं !

कालिन्दी—हाँ यह त्रिकालदर्शी हैं

बेनी—माता जरा अपना हाथ तो दिखलाना ।

(सरोजिनी हाथ फैलाता है, बेनी हाथ धरकर चूम लेता है)

Taj Tahir Foundation

सरोजिनी—हैं, यह कैसा जाल ! साधू के भेषमें चांडाल !

कालिन्दी—बेनीबाबू बढ़ाओ मेरा मेहनताना ।

बेनी—ये लो, जाव ।

सरोजिनी—अरे कोई दौड़ो दौड़ो मुझे बचाव ।

बेनी—अब ये चीत्कार व्यर्थ है ।

सरोजिनी—आह ! इस षडयंत्र का क्या अर्थ है ?

बेनी—यही कि तू नालायक जुगल का ख्याल छोड़ कर मेरी बन जा ।

सरोजिनी—चुप हो जा नरपिशाच !

बेनी—सरोजिनी ! सरोजिनी !! ऐसा न कह । क्या तू जानती है कि मैं तेरी काली काली घुँघराली अलकों की निराली जंजीर में किस तरह जकड़ा हूँ ।

:मैं घायल हूँ प्यारी तेरे नैन सर का ।
पुजारी हुआ हूँ आ प्रिये तेरे दर का ॥
मैं मरता हूँ मेरी जाँ मुझको जिला दे ।
मुझे प्रेम रस का पियाला पिला दे ॥

सरोजिनी—भुला दे, भुला दे, नीच पापी ! मुझे भ्रष्ट करने का ध्यान भुला दे । अपवित्र प्रेम में आग लगा दे । इस कुभावना को हृदय से निकाल दे ।

पाप से डरकर अधम सत को मन से मान दे ।
ईश के होना है सम्मुख इस तरफ भी ध्यान दे ॥

बेनी—हः हः हः ! सरोजिनी ! तू क्या कहती है, कुछ

Taj Tahir Foundation

मेरी समझ में नहीं आता है। सच बात तो यह है कि मुझे तेरे प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं सुहाता है।

सूरति मधुर यह तेरी आँखें में है समायी।
तेरे सिवा कुछ मुझको देता नहीं दिखायी॥

सरोजिनी—पर यह सारा सौन्दर्य्य नश्वर है, वह दीप बुझने वाला है, जिसकी चमक पर तू पतंग सा प्राण देने पर तत्पर है।

नहीं रहने की ये लावण्यता जो आज मुखपर है।
बुढ़ौती चार दिन में रूप हर लेने पै तत्पर है॥
न धोखा खा समझ कर स्वर्ण ये केवल मुलम्मा है।
सदा जो रह नहीं सकता वह नश्वर है, निकम्मा है॥

बेनी—वही सही, पर तुझे प्रसन्न होना चाहिये कि तेरा भाग्य चमकने वाला है।

न जीवन में कभी फिर भेंट होगी दुःख से तुझसे।
मिटेंगे सब तेरे संकट करेगी प्रेम जो मुझसे॥

सरोजिनी—अपने वचनों का पालन कर।

बेनी—मैं अपने विचारों पर तत्पर हूँ।

सरोजिनी—माता कहकर पाप दृष्टि न डाल।

बेनी—सतयुग, त्रेता, द्वापर नहीं, यह कलियुग है।

सरोजिनी—माता पर पुत्र की पाप-दृष्टि?

बेनी—कदापि नहीं।

सरोजिनी—तो क्या मैं तेरी माँ नहीं?

बेनी—हरगिज नहीं।

सरोजिनी—क्या तूने मुझे माता कहकर नहीं पुकारा है?

बेनी—पुकारा है, फँसाने के लिये। तुझे धोखे से घर लाने के लियें, अपना मतलब निकालने के लिये। तू मेरी माता कभी नहीं हो सकती। तू तो मेरे प्राणों की प्यारी है।

सरोजिनी—यह तेरी नालायकी और बेहयायी है।

बेनी—खैर बेहयायी सही, पर तेरे लिये तो भलाई है?

सरोजिनी—मुझे इस भलाई से बुराई अधिक प्यारी है

यह सब दिखौवे सुख के साधन जगमें धन और मान हैं।
चार दिन के हेतु सब आनन्द के सामान हैं।
तुच्छ है संसार का सुख धर्म ज्ञानी के लिये।
पाप लिप्सा छोड़ थोड़ी जिन्दगानी के लिये॥

बेनी—ये उपदेश पागलों के लिये रख छोड़। बोल, तुझे मेरी प्रार्थना स्वीकार है या नहीं?

सरोजिनी—नहीं, कदापि नहीं।

बेनी—जानती है इस नहीं का क्या परिणाम होगा?

सरोजिनी—जो भाग्य में बदा होगा।

बेनी—नहीं, बल्कि पहले तेरे सोहन का और फिर तेरा सर धड़ से जुदा होगा।

दुखाकर दिल मेरा संसार में तू कल न पायेगी।
न मानी बात तो संतान के खूँ से नहायेगी॥
हृदय तू पुत्र की शोकाग्नि में अपना जलायेगी।

Taj Tahir Foundation

सदा आँखों से अपने अश्रु की धारा बहायेगी॥
न तेरा धर्म ठहरेगा, चलेगा वार जब मेरा ।
ठहरता है कहाँ तक देखना है मुझको हठ तेरा॥

सरोजिनी—जबतक सूर्य्य, चन्द्र, पृथ्वी, आकाश, अपने अचल नियम पर निश्चल हैं, तबतक मेरे धर्म्म का डिगना असम्भव है। धन-धाम चला गया है तो क्या, अभी भी सती के सत्य की सत्ता और पतिव्रत धर्म्म की महत्ता बाकी है।

गिरा सकता नहीं धन का प्रलोभन धर्म्म से मुझको।
हटा सकती नहीं हत्या कभी शुभकर्म्म से मुझको॥

बेनी—तो क्या तुझे मेरे अत्याचारों का तनिक भी डर नहीं है?

सरोजिनी—तो क्या तुझे भी परमात्मा के न्याय की खबर नहीं है? उस मान-मर्दन दीनबन्धु के कोप का तनिक भी डर नहीं है?

बेनी—किन्तु तेरे दिल में जो व्यर्थ की बातों का डर है, वह मृत्यु और संकट को सामने देखकर उसके डर से भाग जायगा। थोड़ी ही देर में पतिव्रता का विचार मेरे हाथों में कटार देखते ही तेरे हृदय से दूर हो जायगा। अब नम्रता से नहीं, कठोरता से तेरी सतीत्व की साड़ी में दाग लगाया जायगा। फिर तेरा सर मेरे कदमों से टकरायगा और ये सारा सतीत्व का अभिमान काफूर की तरह उड़ जायगा।

.सरोजिनी—नहीं, नहीं, ऐसा कभी नहीं होगा। रीमे

Taj Tahir Foundation

सतीत्व की चादर में उसी दिन दाग लगेगा, जिस दिन जमीन और समुद्र में युद्ध होगा। समस्त संसार में भूडोल आयेगा। आसमान के टुकड़े टुकड़े हो जायँगे। चाँद और सूरज टकरा कर नष्ट हो जायँगे। चित्रगुप्त के हाथ से जीवन-मरण के लेख की पुस्तक गिर जायगी, पृथ्वी बतासे की भाँति प्रलय के पानी में घुल जायगी।

स्वर्ग नर्क के द्वार जब बन्द होंगे।
ऋषि होके पापी करेंगे बुरायी॥
मही पर उतर आयेंगे चन्द्र दिनकर।
न नक्षत्र ही नभ में देंगे दिखायी॥
कलाधर की किरणों से वर्षेंगी अग्नि।
दिवाकर से अमृत की धारा वहेगी॥
न उस दिन भी आँचल में दागी लगेगी।
कि जब ईश सत्ता न वाकी रहेगी॥

बेनी—क्यों कष्ट को मेहमान बनाती है? व्यर्थ अपनी और अपने संतान की जान गँवाती है?

सरोजिनी—नहीं, यों कहो कि एक सती नारी अपना और अपने बच्चे का बलिदान कर अपना सतीत्व बचाती है।

दास हो सकती नहीं, सुखके लिये दुष्कर्म की।
प्राण दे रक्षा करूँगी, अपने नारी धर्म की॥
धर्म की चिन्ता है धन और धाम की चिन्ता नहीं।
सत्य की चिन्ता है कुछ आराम की चिन्ता नहीं॥

Taj Tahir Foundation

सुख की चिन्ता नहीं, सन्तान की चिन्ता नहीं।
शान की चिन्ता है मुझको जान की चिन्ता नहीं॥
दासी हो सकती नहीं सुख के लिये दुष्कर्म की।
प्राण दे रक्षा करूँगी, अपने नारी धर्म की॥

बेनी—ठहर जा देखता हूँ तेरा अभिमान।

मनोहर—(आकर) सावधान!

(बेनी के सिरमें पिस्तौल लगाना, बेनी का भौचक होकर देखते रहना, मनोहर सरोजिनी के साथ धीरे धीरे पीछे की ओर हटता है और मकान से बाहर हो जाता है।)

Taj Tahir Foundation

चतुर्थ दृश्य

मिस्टर डफालचन्द वकील का घर

(बेनीबाबू का घबड़ाते हुए आना)

बेनी—(इधर उधर देखता हुआ स्वतः) हे हिन्दुओं के परमात्मा ! यह पुलिस के बागड़बिल्ले तो मेरा पीछा ही नहीं छोड़ते। ज्योंही आज घरसे बाहर निकला, त्योंहीं देखा कि वारण्ट, सम्मन, डिगरी के भूत मेरे पीछे अभिनन्दन-पत्र लिये घूम रहे हैं। (दर्शकों से) मित्रो ! मैं आपलोगों से यह पूछता हूँ कि जुगल के मित्र मनोहर का मैंने क्या बिगाड़ा है, जो उसने मेरे लिये यह षड़यन्त्र रचा ? (नेपथ्य की ओर देखकर) अच्छा बेटा मनोहर ! यदि मैं आदमी का बच्चा हूँ तो तुझसे बदला लेकर ही चैन पाऊँगा। तू हाथ न आया तो जुगल से बदला चुकाऊँग। (दर्शकों से) क्या मैं अच्छे कपड़े न पहनूँ ? मुफ़्त का माल मिलने पर भी घोड़ा गाड़ी न दनदनाऊँ ? मित्रों में मूछें खड़ी और नाक ऊँची न रक्खूँ ? मैं आपलोगों से पूछता हूँ कि यदि मैं एक के सर से पगड़ी उतार कर दूसरे के सर पर रखता हूँ तो अदालत वालों के पेट में क्यों दर्द होता है ?

आज ज्योंही मैं घरसे बाहर निकला कि अदालत के एक

Taj Tahir Foundation

कुत्ते ने मुझे बिल्ली समझ कर दौड़ाया। परन्तु मित्रो ! मैं भी इस संसार में लोमड़ी का जन्म लेकर आया हूँ। बस, मैं भी उसे इधर उधर का मुगालता दे, पीछे से एक चपत जमा, जब तक वह अपनी खोपड़ी सुहरावे, तबतक दौड़कर इस घर में घुस आया। (हँसकर) वाहरे मैं और वाहरे मेरी चतुरायी ! अब हम तो यहाँ खड़े अपने आनन्द के राग में मग्न हो रहे हैं और वे बाहर खड़े अपने बापके नामको रो रहे हैं। (सहसा कुछ सोचकर इधर उधर देखता हुआ) परन्तु यह घर किस-का है ? यदि इस घर का मालिक आगया और मेरे आने का कारण पूछ बैठा तो क्या उत्तर दूँगा ? (सोचकर) अजी आने दो, समय आने पर कुछ अट्ट सट्ट ठोक दूँगा। (मोछ पर ताव देता हुआ टहलता है)

(कल्लू नौकर का प्रवेश)

कल्लू—(आते ही बेनीबाबू की तरफ देखकर स्वतः) हैं ! यह कौन ? (सोचकर) ठीक है। वकील साहब कहते थे कि आज मेरा साला आने वाला है। कहीं वही तो नहीं आ धमका ? (आगे बढ़कर बेनीबाबू से) अजी भाई साहब ! यदि आप कृस्तान हैं तो गुडमौर्निङ्ग ! हिन्दू हैं तो राम राम ! और मुसलमान हैं तो वालेकुमस्सलाम !

बेनी—(स्वतः) लो चलती गाड़ी में रोड़ा अटका, आ गया जिसका था खटका। अब कारण क्या बतायें ? (सोच कर) ठीक है। (प्रकट) अहा ! कौन मेरे पुराने मित्रच

कहो यार, अच्छे तो हो ? बाल-बच्चे तो अच्छे हैं। तुम तो आज बहुत दिनों के बाद मिले।

कल्लू—(स्वतः) मैं और इसका मित्र !(सोचकर) यह तो कोई पाकेटमार जान पड़ता है। (प्रकट) अजी इन सब बातों को छोड़िये और यह बताइये कि आप यहाँ क्या करने आये हैं ?

बेनी—(डपट कर) क्यों बे झूठे ! तूने मुझसे कहा था न कि मैं तुम्हें अपने पिता के बिवाह में बुलाऊँगा।

कल्लू—हैं ! पिता के विवाह में बुलाऊँगा ! तुम आदमी हो कि घनचक्कर ? जल्द बताओ, मेरी मालकिन के लिये कुछ सौगात लाये हो या वकील साहब से किसी मुकद्दमे की सलाह पूछने आये हो ?

बेनी—(चौंककर स्वतः) वकील ! अररररर ! क्या मैं पुलिस के डर से वकील के घरमें घुस पड़ा ? हाय हाय ! यहाँ भी पकड़े जाने का खटका, आम से गिरा तो बबूल में अटका। (प्रकट) हाँ हाँ उन्हों से मिलना है।

(बाहर की तरफ देखता है)

(नेपथ्य से आवाज आती है, कल्लू ! अबे ओ कल्लू !!)

कल्लू—लीजिये गरम एञ्जिन की तरह भभकते हुए वकील साहब भी आ पहुँचे।

(क्रोध में भरे डफालचन्द वकील का आना)

बेनी—(डफालचन्द को देखकर स्वतः) लो आगया

बेदुम का लंगूर। बस, अब यहाँ पर पुटबाजी से समय निकालना चाहिये।

डफाल—(क्रोधमें कल्लू से) क्यों बे, तू जवाब क्यों नहीं देता ?

कल्लू—जवाब देने के लिये कोई दूसरा नौकर रख लीजिये

डफाल—(चिढ़कर) चुप रह मूर्ख का बच्चा।

कल्लू—बहुत अच्छा, यह मूर्ख का बच्चा चुप रहता है, परन्तु (बेनी को दिखाकर) यह देखिये, बुद्धिमान का बाबा आपसे मिलने के लिये आया है।

(चला जाता है)

(बेनी और डफाल की आँखें चार होती हैं। बेनी झुककर सलाम करता है)

बेनी—(स्वतः) बस, अब मेल ट्रेन और पैसेञ्जर की टक्कर का समय आया।

डफाल—(स्वतः) बहुत दिनों पर एक शिकार हाथ आया। (प्रकट) अख़हः आइये आइये महाशय, कहिये क्या बात है ?

(बेनी चुपचाप खड़ा डफालचन्द की तरफ देखा करता है)

डफाल—(आश्चर्य्य से) हैं ! आप तो कुछ जवाब ही नहीं देते ?

बेनी—आप जैसे वकील को और मैं जवाब दूँ ?

डफाल—अजी महाशय! आप ख़ामख़ाह सर क्यों खपाते हैं? अपने आनेका कारण क्यों नहीं बताते हैं?

बेनी—(स्वतः) अब कारण क्या पत्थर बताऊँ? क्या करूँ चला जाऊँ? (नेपथ्य की ओर देखकर) अररररर! वह सब तो अभी मेरा स्वागत करने के लिये खड़े हैं, खम्भे की तरह अड़े हैं।

डफाल—(डपटकर) अजी जल्दी बताओ, मुझे कचहरी जाना है।

बेनी—कचहरी जाना है तो जाइये। मुझे कोई जल्दी नहीं है। आपके घरको मैं अपना ही घर समझता हूँ। यह लीजिये, मैं बैठ गया।

(कुर्सी पर टेढ़ा होकर बैठ जाता है)

डफाल—हैं! यह तो यहीं बैठ गया!

बेनी—महाशय! थोड़ी कृपा और करिये। अपने नौकर को एक कप् चाय, और आठ आनेका रसगुल्ला लानेकी आज्ञा देते जाइये, मैं आपके आनेतक जलपान ही कर छोड़ूँगा।

डफाल—(चिढ़कर) बस, मैं आपको नोटिस देता हूँ कि अगर किसी मुकद्दमे का मस्विदा लिखवाने आये हैं तो लिखवाइये, नहीं तो चलते फिरते नजर आइये।

बेनी—अच्छा तो आप उछल कर कुर्सी पर बैठ जाइये।

डफाल—(टेबिल के पास बैठकर) हाँ, लिखवाइये।

बेनी—(स्वतः) अब लिखवाऊँ क्या अपना सर?

Taj Tahir Foundation

(प्रकट) तो वकील साहब ! कलम तो कोई अच्छी सी मँगावाइये। (कलम उठाकर देखता हुआ) यह कलम है कि हज्जाम का उस्तरा ? आप लिखते हैं कि अक्षरों का सर मूड़ते हैं ?

डफाल—हैं ! फिर वे ही बेसर पैर की बातें !

बेनी—(बाहर की तरफ देखकर स्वतः) अभी सिपाही गये कि नहीं ?

(फिर कुर्सी पर बैठकर ऊपर छत की ओर देखते लगता है)

डफाल—अजी यह आप क्या देख रहे हैं ?

बेनी—मैं देख रहा हूँ कि बरसात निकट है, आपने अभी तक अपने मकान की मरम्मत नहीं करायी, कहीं जो यह गिर पड़ा और आपका कोई पड़ोसी दब कर मर गया, तो चट्ट ही पुलिस आकर आपका गला दबायेगी, उस समय सारी वकालत भूल आयगी।

डफाल—(चिढ़कर) तो आपको इसकी क्या चिन्ता है ?

बेनी—चिन्ता क्यों नहीं ? आखिर मैं भी तो इस मकान में बैठा हूँ।

डफाल—अजी मिस्टर......

बेनी—जी हाँ, मेरा नाम मिस्टर कैलाशचन्द्र।

डफाल—हाँ तो मिस्टर कैलाशचन्द्र ! अब जो लिखवाना हो जल्द, बल्कि फौरन से पेश्तर लिखवाइये।

बेनी—अच्छा तो लिखते जाइये। मेरे बाप माँ के घर हम सब मिलकर सत्रह भाई बहिन हैं। देखिये, यदि आप

बीच में बोलेंगे, तो मैं एक शब्द भी न लिखा सकूँगा। लिखिये हमारे सत्रह भाई बहिन हैं।

डफाल—(लिखकर) अच्छा आगे बढ़िये।

बेनो—जिनमें सोलह लड़के और दो लड़कियाँ।

डफाल—यह तो अट्ठारह हुए।

बेनी—बराबर, हाँ अट्ठारह हुए।

डफाल—(झुँझला कर) आप तो पहले सत्रह लिखाते हैं, अब एक और बढ़ाते हैं।

बेनी—तो एक कम कर दीजिये, चलो सत्रह ही सही।

डफाल—(लिखकर) अच्छा फिर?

बेनी—लिखिये, उन सत्रह में से यह सेवक (कुर्सी पर खड़े होकर) सब से बड़ा लड़का है।

डफाल—हैं! आप खड़े क्यों होगये?

बेनी—अपना बड़प्पन दिखाने के लिये। (रोने लग जाता है)

डफाल—हैं! आप रोते क्यों हैं?

बेनी—रोता इस वास्ते हूँ कि जब मैं पैदा हुआ तो मेरे पिता का स्वर्गवास होगया।

डफाल—यानी?

बनी—मर गये।

डफाल—(आश्चर्य्य से) तो मिस्टर कैलाशचन्द्र! जब आप सब से बड़े लड़के हैं……

Taj Tahir Foundation

बेनी—जी हाँ।

डफाल—[झुँझला कर] तो फिर बाकी के सोलह कहाँ से पैदा होगये ?

बेनी—अररर मैं भूल गया, कदाचित मैं सबसे छोटा लड़का हूँ, छोटा।

डफाल—[लिखकर] अच्छा आगे लिखवाइये।

बेनी—लिखिये, हम सब मिलकर अपने बाप के सत्रह...

डफाल—(बिगड़ कर) अजी तुम आगे भी कुछ लिखाते हो या एक ही जगह तेली के बैल की तरह चक्कर लगाते हो ?

बेनी—तो आप बड़े मूर्ख हैं। कहते क्यों नहीं कि मैं लिख चुका।

डफाल—[क्रोध से] बस चले जाइये, मैं ऐसे बेवक़ूफ़ मुअक्किल का मुकद्दमा नहीं लिख सकता। [बेनी को घूरता है]

बेनी—[स्वतः] बहुत देर हुई, अब तो वे सब चले गये होंगे। [बाहर की ओर देख कर] हैं ! वह सब दुष्ट तो तार के खम्भे के समान वहीं खड़े हैं ! अब क्या करूँ ? क्या फिर वकील साहब को बुत्ता देकर बैठ जाऊँ ? [कुर्सी पर बैठ कर] अजी वकील साहब ! मैं अपने पिता के शोक में ऐसा पागल होगया था कि मुकद्दमा लिखवाना ही भूल गया। अच्छा अब लिखिये।

डफाल—[कलम उठाकर] अच्छा, जल्दी लिखवाइये।

Taj Tahir Foundation

बेनी—लिखते जाइये। हम सब मिलकर अपने बाप के…

डफाल—[जोरसे कलम को पटक कर झुँझलाता हुआ] हत्तेरी और तेरे बापकी ऐसी तैसी। चल भाग यहाँ से। [घूरता रहता है]

बेनी—अजी आप पतलून के बाहर न होइये । मैं आप ही चला जाता हूँ। (आगे बढ़ कर फिर रुक कर कुछ सोचते हुए) अजी वकील साहब ! इधर आइये। जरा अपनी फीस तो बताइये।

डफाल—[मन ही मन खुश होकर स्वतः] तब तो कुछ जरूर देगा । [प्रकट] फीस ! फीस एक घण्टे की केवल दस रुपये ।

बेनी—दस रुपये ! तो मैंने आपके साथ तीन घण्टे झख मारी, लाइये तीस रुपये ।

डफाल—हैं ! यह उल्टी फीस कैसी ?

बेनी—निकाल रुपये, तेरे वकील की ऐसी तैसी।

[दोनों का आपस में मारपीट करते हुए चले जाना]

Taj Tahir Foundation

पञ्चम दृश्य ।

कामलता का मकान

[कामलता का दो लड़कियों के साथ गाते दिखायी देना]

*** गाना ***

आओ गाओ हिल मिल बहिनों, काली घटा घिरि आई रे ।
फुहि-फुहि पड़त फुहार मनोहर, सजन मिलन ऋतु आई रे॥आ०
अंग अनंग रंग रस भीने, कुच चमकैं डाले पट भीने ।
सो शोभा के खान भये,
मानों बैठे कमल पर मधुकर लोभी मधु रस को पीने ॥
जोबन जोर शोर से उमड़े, अँगिया मोरी मसकाई रे॥ आ० ॥

बेनी—वाह वाह ! क्या कहना है । आज तो तुम्हारा भवन इन्द्रासन को भी मात कर रहा है ।

कामलता—ये सब आप का ही प्रताप है । अच्छा, अब तुम दोनों जाव, उधर कमरे में बैठकर सरगम साधो ।

बेनी—प्यारी कामलता ! मैंने तो अपना काम पूरा कर दिखाया, पर तुमने अपना वचन न निभाया ।

कामलता—वह क्या ?

बेनी—वही चौथाई का इक़रार !

कामलता—तो मुझे क़ब है इनकार ।

Taj Tahir Foundation

बेनी—फिर कब मिलेगा ?

कामलता—मिला ही समझ लो। सुनो, यह तो तुम जानते ही हो कि मनोहर जुगल के लड़के का वली बनकर मौरूसी जायदाद का मुकद्दमा लड़ रहा है।

बेनी—फिर ?

कामलता—मान लो वह जीत गया, तब ?

बेनी—हो सकता है।

कामलता—फिर तो यह जायदाद हाथ से निकल जायगी।

बेनी—ऐसा नहीं हो सकता है।

कामलता—क्यों ?

बेनी—मेरी तरकीब से चलो। सुनो [कान में कहकर] इस तौर से शिकार को काबू में रक्खो !

कामलत—ठीक है। अच्छा तो तुम जरा हट जाव, मैं उसे बुलाती हूँ और अपना जाल बिछाती हूँ। तब तुम आ जाव और मेरी हाँ में हाँ मिलाव।

बेनी—अच्छी बात है। [जाना]

कामलता—रामचरन !

रामचरन—[आकर] क्या हुकुम है ?

कामलता—जुगलबाबू कहाँ हैं ?

रामचरन—नीचे पलँग पर पड़े कराह रहे हैं। जान पड़ता है, अब अच्छे न होंगे। बस थोड़े दिन के और मेहमान हैं।

कामलता—मरे भी तो, जल्दी से पीछा तो छूटे।

Taj Tahir Foundation

रामचरन—ऐसी बात है तो मैं आज ही गला टीप दूँ।

कामलता—चुप पाजी! अच्छा जा, जरा उन्हें बुला ला।

रामचरन—बहुत अच्छा। [जाता है]

कामलता—बस, अब किसी भाँति उससे कर्ज का कागज लिखवाना चाहिये और उसे धता बताना चाहिये। जब उसके घरवाले मुकद्दमा जीत जायँगे, तो मैं उसपर निसान निकलवाऊँगी और फिर उसी जायदाद को बेचकर उसके घर वाले मेरा रुपया चुकायेंगे, तो उसे जेल से छुड़ायेंगे।

जुगल—[आकर] कहो क्या हुकुम है?

कामलता—[हाथ धरकर अपने पास बैठाती हुई] बैठो प्यारे! तुम तो जब से बीमार पड़े ऊपर आते ही नहीं।

जुगल—[स्वतः] तो तूही कब मेरे पास आती है।

कामलता—प्यारे! आह, तुम तो दिनोंदिन सूखते जा रहे हो।

जुगल—सब कर्मों का भोग है आखिर पाप का प्रायश्चित तो करना ही होगा, जैसा किया है वह तो भरना ही होगा।

कामलता—आह!

जुगल—दुःख न करो। आहा! मैं अब भी तुम्हें दुःखी नहीं देख सकता। कहो, कहो, तुम उदास क्यों हो?

किस लिये मन की कली दिखती है मुरझायी हुई।
चन्द्रमुख पर क्यों है ये दुख की घटा छायी हुई॥

कामलता—(उठकर) ६

क्या बताऊँ बात है इस वक्त एक आयी हुई।
जिससे तबियत है हमारी ऐसी मुरझायी हुई॥

जुगल—पर कुछ कारण तो बताओ कि—

किस लिये मुहँ पर उदासी आप के दर्सात है।
किस लिये आँखों से होती अश्रु की बर्सात है॥

कामलता—क्या कहूँ प्यारे!

मैं न कहती पर कहे बिन है कोई चारा नहीं।
न कहती आप से पर दूसरा सहारा नहीं॥

जुगल—प्यारी कामलता! अपना हाल मुझसे न छिपाओ। मन के सारे दुःखों को दूर भगाओ। जो कुछ बात हो सच सच कह जाओ।

Taj Tahir Foundation

कामलता—[ठंढी साँस लेकर] क्या कहूँ दुर्भाग्य की बात, कल मैं घूमते घूमते नीलाम में चली गयी, वहाँ फिटिन नीलाम हो रही थी, नशे की हालत में बोली बोल बैठी और वह गाड़ी मेरे गले पड़ी। साथ में शिब्बो भी गयी थी। उसने रास्ते में जौहरी के यहाँ से कई हार लिये और पाँच हजार का एक हार मुझे भी दिला दिया। पच्चीस सौ की गाड़ी और पाँच हजार का हार। भला अब मैं इतना रुपया कैसे चुकाऊँ, इज्जत कैसे बचाऊँ, यही पछता रही हूँ। अब कान पकड़ा, कभी किसी की बात में न आऊँगी, पर अभी तो बात रखनी ही होगी। तुम तो जानते ही हो कि मेरे पास जो कुछ रुपये थे, सब खर्च होगये। अब कहाँ से रुपये लाकर चुकाऊँ? हर

रोज़ आपके आगे भी रुपये का सवाल कैसे उठाऊँ?

[जुगल सुनकर चुपचाप कुछ सोचने लगता है, कामलता छिपी नजर से जुगल की ओर देखती है, बेनी आता है और दोनों को चुपचाप बैठे देख खड़ा हो जाता है)

बेनी—[स्वतः] मालूम होता है कि कामलता ने अपनी चाल चल दी।

[बेनी आगे बढ़ता है, कामलता देखकर मुस्कुराती है, और इशारे से जुगल को दिखलाती है। बेनी जुगल की बगल में बैठ जाता है]

बेनी—[जुगल के कन्धे पर हाथ रखकर] जुगलबाबू, क्या सोच रहे हो?

जुगल—[चौंककर] अहा, बेनीबाबू! कहो भाई तुम कहाँ थे?

बेनी—स्वर्ग की आखीरी सीढ़ी पर। परन्तु आज बात क्या है?

है हँसी नहीं मुँह पर दिखाती, इस दम का ढंग निराला है।
तुम दोनों ही चुप बैठे हो, यह कैसा गड़बड़ झाला है॥

कामलता—बेनीबाबू! यदि मैं जानती कि मेरा सवाल इन्हें चक्कर में डाल देगा तो कभी बात ही न उठाती।

जुगल—नहीं, नहीं, प्यारी कामलता! तुम्हारी बातों ने मुझे सोच में नहीं डाला है।

बेनी—तो फिर क्या बात है, जो ऐसा स्वाँग निकाला है?

Taj Tahir Foundation

जुगल—मेरे सोच में पड़ने का कारण यह, कि आज कामलता ने कुछ रुपयों की बात उठायी, जिसके सुनते ही मुझे अपनी बीती बात याद आयी। भला तुम्हीं बताओ कि जब मैंने अपना सारा धन इनको अर्पण कर दिया, तब छः सात हजार के लिये क्या सोच करने बैठता ? पर बात यह है कि इस समय मेरी जेब खाली है। अब तुम्हीं कहो कि मैं रुपये कहाँ से लाऊँ ?

कामलता—देखा बेनीबाबू, कैसा अनोखा जवाब है ।

राव के घर में भी मोतियों का काल है
द्रव्य न देना पड़े इस लिये ये चाल है ॥

(कामलता का बेनी को कुछ इशारा करना)

बेनी—नहीं, नहीं कामलता ! यह तुम्हें बना रहे हैं। क्या इतना भी नहीं समझती हो ।

जुगल—तो क्या मैं वृथा ही इतना बक गया। जो तुम सब मुझे बातों में ही उड़ाने लगे ? कामलता ! मैं सत्य कहता हूँ, यदि मेरे पास रुपया होता, तो मैं कभी तुम्हारी जबान खाली न करता ।

मेरी बातों पर हुआ कुछ तुम्हें इतबार नहीं।
लाखों दे डाले तो देता ये कुछ हजार नहीं ॥

कामलता—तो बस समझ गयी। अब आप मुझे नहीं चाहते, इसीलिये इन्कार करते हैं। हाँ समझी, अब आप किसी और को प्यार करते हैं।

Taj Tahir Foundation

जुगल—कामलता! क्यों ऐसे ताने मारती हो? क्या मैं ऐसा नीच होगया कि तुम्हें छोड़कर दूसरी से प्यार करूँगा? नहीं, नहीं, यह तेरा सच्चा प्रेमी तेरे ही प्रेम में बरबाद हुआ है, और तेरे ही प्रेम में मरेगा।

बेनी—तो इन बातों में क्या रक्खा है? इस बातको अधिक न बढ़ाओ। यदि इस समय हाथ में रुपये नहीं हैं, तो कहीं से उधार ही लेकर काम चलाओ।

जुगल—[चिढ़कर] तो तुम्हीं न ले आओ। क्या तुम्हारे पास मेरे रुपये नहीं हैं, जो बातें बनाते हो। आपस में कलह कराते हो?

बेनी—वाह भाई वाह! तुमने तो अच्छी सुनायी। मेरे पास अगर तुम्हारी एक पाई भी आयी तो वह मैंने तुम्हीं लोगों के खर्च में लगायी। हाँ, यदि ऋण लेना चाहते हो तो जितना कहो अभी ला देता हूँ।

जुगल—(स्वतः) तो क्या डर है। अभी तो अस्सी हजार की लागत का यह घर है। क्या हुआ, उधार ही लेकर झगड़ा मिटाऊँ। (प्रकट) अच्छा तो लाओ, कहीं से उधार ही लाओ।

बेनी—हैं! न रसीद न रुक्का और लाओ!

जुगल—हाँ हाँ, यह तो तुमने दस्तूर की बात कही। लाओ कागज और कलम दावात। मैं अभी रसीद लिख देता हूँ।

[बेनी टेबिल पर से कागज और कलम दावात लाकर जुगल

Taj Tahir Foundation

के आगे रख देता है, जुगल रसीद लिखता है]

बेनी—ठहरो, ठहरो, क्या लिखते हो? कितना रुपया लिखते हो?

जुगल—सात हजार! और कितने?

बेनी—वाह भाई वाह! बड़े सयाने। क्या उधार देने वाले जितना देंगे, उतना ही लिखवायेंगे, और कमाने की जगह बैठकर हजामत बनायेंगे? नहीं अगर सात हजार देंगे तो इक्कीस हजार लिखायेंगे, तब कहीं रुपये की सूरत दिखायेंगे।

जुगल—(आश्चर्य्य से) हैं! यह क्या!! एक लेना और तीन देना? नहीं, नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। (कागज कलम रख देता है।)

(बेनी कामलता को कुछ कहने का इशारा करता है)

कामलता—बेनीबाबू! तुम किससे बातें कर रहे हो? यह क्या देंगे! एक का तीन देने का उन्हीं का कलेजा होता है जो प्यार के सामने रुपये-पैसे को मिट्टी समझते हैं।

जुगल—[स्वतः] हैं! एक ही दिन न देने से कंगाल बनना पड़ा! (प्रकट) तो क्या तुम सबने मुझे मुर्दा ही समझ लिया है? लाओ, मैं तिगुना ही लिखता हूँ।

(जुगल रसीद लिखता है, बेनी जेब से एक टिकट निकाल कर देता है। जुगल लेकर रसीद पर चिपका कर सही करता है, और कामलता के सामने फेंक देता है, कामलता उठाकर बेनीको देती है)

Taj Tahir Foundation

जुगल—(कामलता से) लो, अब तो प्रसन्न हुईं।

कामलता—क्या कहूँ प्यारे! मैं तो खुद ही तुम्हारी हालत सुनकर रंजीदः हो रही थी, पर क्या करूँ, मौका ही ऐसा आ पड़ा।

जुगल—(कुछ रुखाई से) रहने दो, रहने दो। तुम्हारा प्यार केवल पैसे का है।

कामलता—यह तो आप जानते ही हैं कि हम सबके यहाँ पैसे बिना पैर रखना भी मुश्किल है। आप तो अभी से ही घबड़ा गये। अभी तो इस नये मकान की दावत में तीन-चार हजार रुपये खर्च होंगे।

जुगल—तो क्या वह भी मुझसे ही लोगी?

कामलता—और दूसरा है ही कौन?

जुगल—तो फिर रोज़-रोज की हत्या मिटाओ। इस घर को बेंच डालो और भाड़े के मकान में चलकर जो कुछ रुपया बचे, उसी से काम चलाओ।

कामलता—[आँखें चढ़ाकर] मकान बेंच डालो! कौन सा मकान?

जुगल—यही अपना मकान और कौन।

कामलता—यह तो मेरा मकान है, इसे कौन बेंच सकता है?

जुगल—(आश्चर्य्य से) तेरा कैसे हुआ? यह तो मैंने बनवाया है।

बेनी—पर भाई! कामलता तो कहती थी कि ईंट, पत्थर,

Taj Tahir Foundation

लोहा, लकड़ी, सुर्खी, चूना, इत्यादि सब मेरे नाम से आया है, और पट्टा भी आपने कामलता के ही नाम से लिखवाया है।

जुगल—(चौंककर) तो क्या उस दिन नशे में मैंने कामलता के नाम से पट्टा लिखाया है ?

कामलता—तो क्या आपको आज याद आया है ? [मुस्कुरा कर] वाह वाह ! मकान पर अच्छा हाथ मारा।

(कामलता बेनी से कुछ कहने का इशारा करती है)

जुगल—(स्वतः) आह ! इसने तो मेरा सर्वस्व हरण करने की ठानी है। [प्रकट] तो फिर मेरी रसीद मुझे लौटा दो। मैंने तो इसी सम्पत्ति के जोर पर इसे लिखा है, जब तुम यह मकान भी अपना ही बना बैठी हो, तो फिर मैं रुपये कहाँ से लाकर चुकाऊँगा।

बेनी—रसीद ! कैसी रसीद ? लाओ, पहले इक्कीस हजार रुपये चुकाओ।

जुगल—(चौंककर आश्चर्य्य से) हैं ! न लिया न दिया और चुकाओ। बेनीबाबू ! तुम मेरे मित्र होकर भी इसकी हाँ में हाँ मिलाते हो ?

कामलता—क्यों न मिलायेंगे, यह तो मेरे पुराने आशिक हैं।

जुगल—(आश्चर्य्य से) तो क्या बेनी ने तेरे ही स्वार्थ के लिये मुझसे झूठी मित्रता का स्वाँग रचा था ?

बेनी—नहीं तो क्या, मैं आपका कोई रिश्तेदार था ?

जुगल—(ठंढी साँस लेकर) समझा, समझा, और

Taj Tahir Foundation

अच्छी तरह समझा। आह! मैंने धोखा खाया। (कड़ी दृष्टि से देखता हुआ) कामलता! क्या अब मेरा प्रेम तेरे लिये भारी होगया?

कामलता—[रुखाई से]

वेश्या को लगता है कंगाल प्यारा ही नहीं।
रण्डियों के घर में पैसे बिन गुजारा ही नहीं॥

जुगल—(क्रोध दबाकर) कामलता! कामलता!! मैं नहीं जानता था कि तू अन्त में ऐसा बर्ताव करेगी। कामलता, क्या तू वही कामलता है?

रही तैयार मुझको देखते जो जान देने पर।
खुशी से फूल उठती थी जो मुझको देख लेने पर॥
थी रोती मेरे आने में जरा सी देर होने पर।
हमारे हेतु जो तैयार थी संसार खोने पर॥
निकल जाते थे जिसके प्राण लखते भौंह में खम को।
जिन आँखों में बिठाती थी दिखाती अब वही हमको॥

बेनी—हाँ, यही यहाँ की सभ्यता है—

पास में पैसा है तो रण्डी के घर में बात है।
प्यार के बदले में वरना मिलता जूता लात है॥

जुगल—सत्य है—

झक मारना है रण्डियों से नेह लगाना।
इज्जत को अपने हाथ से मिट्टी में मिलाना॥
पंजे में इनके पड़के है धन-धाम लुटाना।

Taj Tahir Foundation

थोड़ है इनके वास्ते कारू का खजाना ॥

कामलता—(आँखें लाल कर) बस, चुप रहो। यदि भला चाहते हो तो मुहँ न खोलो। वरना ईंटे का जवाब पत्थर से पाओगे। बड़े धनवान के बेटे बने हैं। खबरदार—

देखो न मेरी शान में कुछ और सुनाना।
चल दूर किसी और को यह ताव दिखाना॥
हम सबका यही काम है दानों का फँसाना।
एक रोज यहाँ फँसता है दाने से भी दाना॥

बेनी—(जुगल से)

बस देखना बक बक न कहीं और लगाना।
चाहो जो भला फिर इस जगह मुहँ न दिखाना॥

जुगल—(क्रोध दबाकर)

पहले मुझे फँसा अब ताव दिखाना।
क्या भूल गये धन के लिये पैर दबाना॥
क्या खूब पसीने की जगह खून बहाना।
जी हाँ हुजूर कहके सदा शीश झुकाना॥
कंगाल बना ताव दिखाता है मुझी को।
घबड़ा नहीं खायेगा तेरा पाप तुझी को॥

कामलता—(भौहें चढ़ाकर) जुगलकिशोर! अपना भला चाहते हो तो यहाँ से चले जाओ।

जुगल—[क्रोध से] ओ नरकगामिनी! तू एक अनजान आदमी को अपने कपट-जाल में फँसा, अच्छी तरह उसका

Taj Tahir Foundation

धन खा कर, आज इस तरह घर से निकाल रही है। बता, बता, मैंने तेरे लिये क्या नहीं किया?

जो सच्चा मित्र था उसका बड़ा अपमान किया।
निकाल घर से दूर नारि और सन्तान किया॥
वेद के मंत्र सा तेरे वचन को जान लिया।
मैंने अमृत समझ के थूक तेरा पान किया॥
स्वर्ग ऐसे घर को तेरे वास्ते श्मशान किया।
तूने उस प्रेम के बदले में यह सम्मान किया॥

कामलता—(मुहँ बनाकर) तो यह कौनसी बड़ी बात थी। तुम्हारे जैसे कितने ही कामी कुत्ते इन तलुओं को चाटने के लिये लालायित रहते हैं।

वाह क्या खूब मुझपै आपने अहसान किया।
आपने पैसे दिये तो हमने भी ईमान दिया।

जुगल—[डपट कर] बस! बस!!

बेरहम वेश्या की जात को पहिचान लिया।
यह समझ लूँगा कि द्रव्य याचकों को दान दिया॥

बेनी—[खिलखिला कर हँसते हुए] बहुत अच्छे—

बाप तो जोड़ मरे पुत्र ने वह दान किया।
प्यार बाजार में करने का इम्तहान लिया॥

जुगल—

तूने ही दुष्ट गले मिल के गला काटा है।
थूक मैंने दिया तो तूने उसे चाटा है॥

Taj Tahir Foundation

आँख क्या मुझको दिखाता है मेरा खा करके।
नर्क में भी न जगह पायेगा तू मर करके॥

कामलता—(क्रोधपूर्वक उठ और हाथ में अपने पैर की चट्टी उठाकर जुगल की तरफ झपटती हुई) अब जाता है या जूते से बात करूँ ?

जुगल—(पीछे हटता हुआ) बस, बस, कामलता, यहीं तक रहने दे। मैं आप ही चला जाता हूँ। (कुछ दूर जाकर पश्चात्ताप से) देखो, देखो, दुनियाँ वालों देखो—

सती को घर छोड़ आया रूप के बाजार में।
धन धाम और मान खोया वेश्या के प्यार में॥
देह का बल, कान्ति मुख की खो दिया व्यभिचार में।
घाटा ही घाटा उठाया इस पतित व्यापार में॥
देख लो मेरी दशा और वेश्या की नीति को।
हों यदि आँखें तो छोड़ो रण्डियों की प्रीति को॥
गाली-गुफ्ता वेश्या के प्रेम का उपहार है।
वेश्यागामी को मिलता जूतियों का हार है॥

(स्वतः) आह ! अब कहाँ जाऊँ ! किधर जाऊँ !! शरीर इस बुरे कर्म के बुरे रोग से जर्जरित हो रहा है, विलास का कोढ फूट-फूट कर निकल रहा है। संसार में अब मुहँ दिखाने लायक भी नहीं हूँ। (कुछ सोचकर) क्या घर जाऊँ ? (चौंककर) नहीं, नहीं, वहाँ भी तो मेरे घोर अत्याचारों की विकराल मूर्ति मुझे भक्षण करने के लिये खड़ी होगी।

Taj Tahir Foundation

धिक्कार है ! मुझपर धिक्कार है !! थूको, दुनियावालों मुझपर थूको ! आह ! मुझसे बढ़कर पापी, कुकर्मी, निर्लज्ज, अधर्मी दूसरा नहीं होगा। हा ! इस अर्ध रात्रि के समय किसकी शरण में जाऊँ ? किसको अपनी कुकर्म की कहानी सुनाऊँ ? कोई नहीं है, संसार में अब अपना कोई नहीं है। आह ! मैंने इस सुनहरी नागिन के लिये सबको खो दिया। अपना बेड़ा अपने हाथ से डुबो लिया। दूर हो जाओ, ऐ नरक के जहरीले बिच्छुओं, मेरे सामने से दूर हो जाओ। तुम सब ने मुझे लूट लिया। मेरा सर्वस्व हरण कर लिया। मेरे सुखों का संसार अन्धेरा कर दिया।

(कहता कहता जुगलकिशोर चला जाता है। कामलता और बेनी आश्चर्य्य से देखते हैं)

कामलता—(स्वतः) चलो इससे तो पीछा छूटा।

बेनी—प्यारी कामलता !

कामलता—कहो, क्या कहना चाहते हो ?

बेनी—अब मेरा काम होना चाहिये।

कामलता—कौनसा काम ?

बेनी—यही कि जो कुछ मेरा हक है उसे देदो। अब उसका फैसला होगया। मेरा भी हिसाब करके जो निकलता हो चुका दो।

कामलता—निकलता हो चुका दो ? क्या मेरे ऊपर जाल बिछाने आये हो ? बोलो मैंने कब तुमसे कर्ज लिया है ?

Taj Tahir Foundation

बेनी—कामलता! दिल्लगी न करो, धीरे से चौथाई मेरे हाथ पर धर दो।

कामलता—कैसा चौथाई?

बेनी—जो वायदा किया था।

कामलता—किसने वायदा किया था?

बेनी—तुमने।

कामलता—तू झूठा है।

बेनी—(ताज्जुब से) मैं झूठा हूँ?

कामलता—यदि सच्चा है तो बोल, तेरे पास इसका क्या सबूत है?

बेनी—सबूत? ओफ़! मैंने पहले यह नहीं समझा था कि ऐसे मामलों में भी सबूत की जरूरत पड़ती है।

कामलता—रामचरण! श्यामचरण!

रामचरण, श्यामचरण—(आकर) जी!

कामलता—इस मुए को जूते मारकर इस घर से बाहर कर दो।

(कामलता जाती है, रामचरण श्यामचरण बेनी को धक्का देकर बाहर निकाल देते हैं)

ड्राप

Taj Tahir Foundation

द्वितीय अङ्क

प्रथम दृश्य

स्थान—एक रास्ता।

(जुगलकिशोर का प्रवेश)

गाना

खुदा ये कैसी मुसीबतों में, ये हिन्द वाले पड़े हुए हैं।
कदम कदम पर हमारे खातिर, सितम के काँटे पड़े हुए हैं॥
हमारे मेहमान आये बन फिर, वो जुल्म करने लगे हमीं पर!
गजब है अपने मकाँ के मालिक, मकाँ से बाहर पड़े हुए हैं।
सिरों पै आफत पड़ी हुई है, गले में खंजर अड़े हुए हैं।
दिलों पर नस्तर चुभे हुए हैं, जिगर में छाले पड़े हुए हैं॥
हजारों बच्चों के बाप बिछुड़े, वह तेग किस्मत के होके टुकड़े।
सुहागिनों के सुहाग उजड़े, घरों में ताले पड़े हुए हैं॥
हवा जमाने की बिगड़ी अय्यर, वह जुल्म करने लगे सरासर।
सुनायें फरियाद किसको जाकर, जबाँ पै ताले जड़े हुए हैं॥

जुगल—(स्वतः) हा! मैं कहीं का न रहा। मेरा सर्वस्व लुट गया और मैं मुहँ देखता रह गया। चूँ भी न

Taj Tanir Foundation

कर सका। बल्कि लूटने वालों की हँस-हँस कर मदद करता रहा। पर अब क्या करूँ ? किस प्रकार उस सच्ची पतिव्रता धर्म की मूर्ति सरोजिनी के सम्मुख जाऊँ ? किस प्रकार उससे अपने अपराधों की क्षमा माँगूँ ? क्या वह अपने हृदय में मुझे स्थान देगी ? (सोचकर) देगी, अवश्य देगी। वह वेश्या नहीं, विवाहिता कुल-ललना है। उसे धन से नहीं, मुझसे प्रेम है। उसका और मेरा बाजारू नहीं, धर्म का सम्बन्ध है। अतः वह—

दुःख में पति को न तजेगी पतिव्रता नार है।
है असत् उसमें नहीं वह सत्य की औतार है॥
वेश्या से डूबे कुल, नारी से बेड़ा पार है।
पतित पति भी सती स्त्री के लिये करतार है॥
फल यही होगा, जिन्हें बाजारियों से प्यार है।
नारी तज परनारियों पर मरता था मैं धिक्कार है॥

(पृथ्वी की ओर देखता हुआ) उठा ले, माता वसुन्धरे ! मुझे शीघ्र ही अपनी गोद में सुला ले। जिससे मुझ अधम की छाया भी किसी पर न पड़े।

बस अब मेरे वास्ते भूगर्भ में स्थान है।
नारी तज व्यभिचार करने का यही प्रतिदान है॥
तज अपने को, झूठी आस रक्खी थी बेगाने की।
नहीं सूरत कोई संसार में अब मुहँ दिखाने की॥

परन्तु अब क्या उपाय करूँ ? हे भगवान ! अब इस पापी

Taj Tamir Foundation

का बेड़ा पार करने वाले तुम्हीं हो। क्योंकि तुम्हारा नाम पतित-पावन है, और दीनवन्धु है।

प्रभु दीनवन्धु कहाय दया जो हम पर नहीं दिखाओगे।
तो दीनवन्धु के नाम में अपने नाहक दाग लगाओगे॥

वेनी का चार सिपाही, एक वकील, एक राज-कर्मचारी के साथ प्रवेश करना। जुगलकिशोर का चौंककर देखना)

वेनी—(जुगलकिशोर को देखकर स्वतः) लो विना परिश्रम ही हाथ में आगया। (प्रकट में वकील से) वकील साहब! यही है वह जुगल, इसे गिरफ्तार करो।

(जुगलकिशोर चौंक उठता है)

वकील—(आगे बढ़कर) क्या तुम्हारा ही नाम जुगल किशोर है?

जुगल—हाँ, परन्तु आप कौन हैं?

वकील—हम वकील हैं। [वेनी को दिखाकर] इस अपने मवक्किल की तरफ से तुम्हारे नाम का दीवानी वारंट लेकर तुमको गिरफ्तार करने आये हैं। बोलो, तुम इक्कीस हजार रुपये वावत् हैंएडनोट के देना चाहते हो, या तुमको गिरफ्तार किया जाय?

जुगल—(वेनी की ओर क्रोध से देखकर) ऐ मनुष्य के वेश में राक्षस! क्या मेरा सब कुछ लूटकर भी तू तृप्त नहीं हुआ? जो अब धोखा देकर लिखाये हुए हैंएडनोट की रकम लेने आया है? अरे दुष्ट! तू तो मेरा मित्र था।

Taj Tahir Foundation

बेनी—(क्रोध से) बस, बस, जबान बन्द कर। नहीं तो अच्छा न होगा। मित्र! कौन मित्र! किसका मित्र? मुझसा श्रीमान् और तुझ जैसे कर्जदार का मित्र! रुपया लेती वक्त सभी महाजन को मित्र बनाते हैं, पर चुकाने के वक्त शत्रु बन जाते हैं। ला, मेरा रुपया चुका, या जेल जा।

जुगल—अरे कलियुग का अवतार! अब अच्छा और बुरा क्या देख रहा है—

मित्र कहकर मुझे रण्डी से मिलाया तूने।
कपट का प्रेम दिखा लूट के खाया तूने॥
मित्रता नीच अधम खूब निभाया तूने।
रहा जो मित्र उससे साथ छुड़ाया तूने॥
अन्त बेड़ा मेरा मझधार डुबाया तूने।
करके कंगाल कुछ तर्स न खाया तूने॥
भलाई की नहीं है आस साँप मूजी से।
न फले फूलेगा पापी तू पाप पूँजी से॥

बेनी—(सिपाहियों से) सिपाहियों! क्या देखते हो, बाँध लो इस बेईमान को।

(सिपाही वकील के इशारे से जुगल को हथकड़ी पहिनाते हैं, जुगलकिशोर रोनी सूरत बनाकर बेनी की ओर देखता है)

जुगल—बेनी! बेनी!! क्या तुझे परमात्मा का डर नहीं है? छोड़ दे दुष्ट, इस विपत्ति के समय तो मुझे छोड़ दे। क्या मैंने तेरे साथ ऐसा ही व्यवहार किया था?

Taj Tahir Foundation

वेनी—[आँखें निकाल कर] बस जुगल! बहुत बातें न बना। या तो रुपया चुका, या कारागार में जा।

जुगल—मैं फिर कहता हूँ, मुझे इस समय छोड़ दे।

वेनी—ऐसा कदापि न होगा।

जुगल—नहीं होगा ?

वेनी—हाँ, हाँ, नहीं होगा।

जुगल—अच्छा तो चल। मैं न्यायालय में न्यायाधीश से अपना न्याय कराऊँगा। यदि मैं सच्चा और निर्दोष हूँ तो अपने बदले तुझे दण्ड दिलाऊँगा।

वेनी—(लापर्वाही से) देखा जायगा। [सिपाही तथा वकील से] चलो, इसे शीघ्र ले चलो।

[मनोहर का प्रवेश करना, जुगलकिशोर का देखकर रुक जाना, बेनी का एक तरफ हटकर खड़े हो जाना]

मनोहर—(आते ही) ठहरो, ठहरो ! इस निर्दोष को कहाँ ले जाते हो ?

वेनी—[स्वतः] हाय! हाय!! यह दुष्ट कहाँ से आ पहुँचा।

वकील—(जुगलकिशोर की ओर दिखाकर) यह असामी मेरे (बेनी को दिखाकर) इस मवक्किल का देनदार है, इस लिये वारंट में गिरफ्तार है।

मनोहर—[बेनी की ओर घूरता हुआ] धिक्कार है, दुष्ट तुझपर धिक्कार है।

बेनी—(डपटकर) बस, बस, जवान सम्हाल, नहीं तो अच्छा न होगा।

मनोहर—(क्रोध से बेनी को) ठहर जा, ठहर जा, शीघ्र ही तुझे तेरी करतूत का मजा चखाऊँगा।

जुगल—मित्र मनोहर! इस समय तुम्हारे सिवाय मेरा कोई रक्षक नहीं। बचाओ, मुझे इस नरपिशाच से बचाओ।

मनोहर—न घबड़ाओ, न घबड़ाओ। (वकील से) आप इन्हें छोड़ दीजिये, क्योंकि यह निर्दोष हैं।

डफाल—मैं बिना रुपये पाये नहीं छोड़ सकता। यदि तुम इसे छुड़ाना चाहते हो तो रुपये लाओ।

जुगल—मित्र मनोहर! इस दुराचारी ने मुझे धोखा देकर यह रुक्का लिखाया है, मैंने एक पैसा भी नहीं पाया है।

मनोहर—मैं यह सब वृत्तान्त अपने एक गुप्तचर से सुन कर ही तुम्हारी खोज में आया हूँ। चिन्ता न करो, (बेनी की तरफ दिखाकर) मैं इस नीच से पूरा पूरा बदला लूँगा। वकील साहब! मैं एक बड़े घराने के लड़के को न्यायालय में खड़ा करना नहीं चाहता। इस कारण, (जेब से नोटों का बण्डल निकाल कर देते हुए) यह लीजिये। इक्कीस हजार रुपये और इन्हें छोड़ दीजिये। मैं अभी जाकर न्यायालय से लौटा लाता हूँ और आपके मुवक्किल को धोखा देकर यह रुपया लेने का मजा चखाता हूँ।

डफाल—[रुपये लेकर] अच्छा तो आप न्यायालय में

जाइये। [सिपाहियों से] इसे छोड़ दो।

(सिपाही जुगलकिशोर की हथकड़ी खोल देते हैं, जुगलकिशोर मनोहर के गले से मिलता है)

बेनी—(स्वतः) चलो जी, माल तो हाथ आया।

जुगल—[बेनी से] देख दुष्ट, इधर देख।

देख ले यह मित्रता है मित्र इसका नाम है।
और मुझको देख ले यह पाप का परिणाम है॥
मित्र है नर श्रेष्ठ यह संसार का शृँगार है।
तुझ सरीखे मित्र पर धिक्कार सौ सौ बार है॥

बेनी—[वकील से] चलिये, चलिये, इनकी बातें क्या सुनते हैं, ये दोनों ही पाजी हैं।

(बेनी, वकील तथा सिपाहियों का जाना)

जुगल—मित्र मनोहर! मुझे क्षमा करो। मैं यदि तुम्हारा और मित्रत्व का आदर्श जानता, तो कभी तुम्हें दूर न करता। हा! उस समय मैं व्यभिचार के नशे में ऐसा अन्धा होगया था कि मुझे भविष्य का ज्ञान न था। मेरे अपमानयुक्त शब्दों को क्षमा करो।

मनोहर—भाई जुगल! मुझे लज्जित न करो। तुमने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मुझसे क्षमा माँगते हो। छोड़ दो, इन बीती हुई बातों का ध्यान छोड़ दो। कुछ चिन्ता नहीं। चलो, घर चलो, और पहले अपनी सती-साध्वी सरोजिनी के जलते हुए हृदय को, अपना दर्शन दे, शीतल करो।

Taj Tahir Foundation

जुगल—आह! मैं अब कौनसा मुहँ लेकर उसके पास जाऊँ?

दुःख क्या उसने न झेला मेरे अत्याचार से।

मनोहर—अब उसे सुखिया बनाओ प्रेम के सत्कार से॥

(दोनों का प्रस्थान)

द्वितीय दृश्य

कामलता का मकान

वेनी—[आकर] कामलता! कामलता!! यदि मैंने इस अपमान का बदला न लिया, तो मेरा नाम वेनी नहीं, अभी इस धोखेबाजी का तमाशा दिखाता हूँ, बाहर जाकर इस घर में आग लगाता हूँ और भाग जाता हूँ।

(मकान में आग लगना। कामलता, लालसा, रामचरण तथा श्यामचरण का हाय बापरे यह क्या हुआ! किसी पाजी ने घर में आग लगा दिया। लुट गये, बरबाद होगये, अरे कोई आओ, बचाओ, चिल्लाते हुए भागना चाहना मगर किवाड़ बन्द पाकर घबड़ाना, मकान का टूट टूट कर गिरना, चन्द लोगों का दरवाजा तोड़ कर आग बुझाने की कोशिश करते नजर आना)

Tai Tahir Foundation

तृतीय दृश्य

डफालचन्द का मकान

[कल्लू का गाते हुए प्रवेश]

※ गाना ※

मिले जिसको नौकरी ऐसी, बहार देखे कैसी।
थूको मारो सेवकाई पर, नौकरी की ऐसी तैसी ॥
उठते बिस्तर से मालिक की गाली और झिड़की खाना।
और भोर से बारह बजे रात तक सेवा करते जाना ॥
वो गधा कहें, तो हुजूर सच है, यह मुहँ से फरमाना।
पर पैसा माँगने के खातिर जिभ्या मत कभी हिलाना ॥
वो जैसी जैसी बात कहें, तुम करते जाओ तैसी ॥मिले०॥

धत्तेरी नौकरी की ऐसी तैसी! फाँके करो पर तनखा न माँगो। बस, काम करते जाव तो ठीक, नहीं तो गाली खाव, जब देखो तब मालिक और मालकिन के दिमाग का थर्मामेटर का पारा एक सौ पाँच डिगरी पर चढ़ा ही रहता है। लो, वड़े साहब कुत्ते की तरह भौंकते आ रहे हैं।

(डफालचन्द का क्रोधमें भरे आना)

डफाल—क्यों बे, अभीतक खानेका टेबिल नहीं सजाया?

कल्लू—(स्वतः) आयी शामत। [प्रकट] क्षमा करिये, भूल गया था।

Taj Tahir Foundation

डफाल—(आँखें निकालकर) तो यहाँ क्या करता था ?

कल्लू—आपके घरकी ईंटें गिनता था।

डफाल—(आश्चर्य्य से) ईंटें गिनता था ! सो क्यों ?

कल्लू—मैं हिसाब करता था, यदि एक ईंट रोज बेंचकर खाऊँगा तो कितने दिनतक इस घरमें नौकरी कर सकूँगा।

डफाल—अबे मूर्ख ! ईंटा क्यों बेचेगा ?

कल्लू—इस लिये कि पाँच रुपये महीने में गुज़ारा नहीं चलता और वेतन भी हर महीने नहीं मिलता।

डफाल—(दाँतोंसे उँगली काटकर) अच्छा कल तुझे दूँगा

कल्लू—(जाते जाते स्वतः) अब आया राह पर।

डफाल—(स्वतः) सच तो बेचारा कहता है। पर रुपये लाऊँ तो कहाँ से लाऊँ ? (पतलून की खाली जेबें दिखाता हुआ) यहाँ तो दोनों जेब ही भरे रहते हैं। जोरू की खरीद ने तो दिवाला निकाल रक्खा है। कमाई का क्या पूछना है, कोई मुअक्किल मिल गया तो दो-चार रुपये मिल जाते हैं नहीं तो रोते-पीटते घर चले आते हैं। (सहसा प्रसन्न होकर) उहँ। चलो जी फिर भी क्या परवाह है ! क्या हम किसी कंगाल से कम हैं। और कुछ नहीं तो मुअक्किलोंके सामने दो-चार लाख रुपये मुहँ से ही गिन जाने में अपने आपको बड़ा आदमी समझते हैं। एक बात और है, यदि मेरा तीर निशाने पर लगा, तब तो आज रुपये पाँच सौ टन्न-टन्न करते हुए मेरे पास आ जायँगे।

(सहसा नेपथ्य की ओर देखकर चौंकते हुए)

Taj Tahir Foundation

हैं! यह कौन? (सोचकर) बस चालाकी से काम लेना चाहिये। आदमी तो कोई भला जान पड़ता है। (मूछों पर ताव देता हुआ टेढ़ी टाँगें किये हुए एक ओर मुहँ मोड़कर खड़ा हो जाता है, मंगलसिंह का हाथमें रजिष्टर लिये आना)

मंगलसिंह—(रुककर स्वतः) है तो आनन्द में। बस, आज इससे चन्दा मिल जायगा। (आगे बढ़कर प्रकट) वकील साहब! जय-शक्ति की!

डफाल—(घूमकर देखते और हँसते हुए) अहा! आइये महाशय! कहिये, आज तो बड़ी कृपा की।

मंगल—आप धन्य हैं! आपकी योग्यता सराहनीय है। मैं भी आपका नाम सुनकर ही आपकी सेवामें उपस्थित हुआ हूँ।

डफाल—तो बड़ी कृपा की। कहिये किसी पर नालिश करनी है या कोई सलाह पूछनी है?

मंगल—नालिश किसपर करनी है। देश-सेवा के लिये आप जैसे सज्जनों से ही प्रार्थना कर कुछ रुपये निकालने हैं।

डफाल—इसकी चेष्टा तो करनी ही चाहिये। तो शीघ्र कहिये, किससे लेना है। मैं आज ही बन्दोबस्त करूँगा।

मंगल—तो फिर इससे बढ़कर और क्या चाहिये। जैसा आपका नाम है, वैसा ही काम होना चाहिये। मैंने तो आपका बड़ा नाम सुना है, और सुना है कि आप एक एक बार में हजारों रुपये चन्देवालों को दे डालते हैं।

डफाल—(स्वतः) हैं! बिना दिये ही इतना नाम!! तब

Taj Tahir Foundation

तो मैं बड़ा ही भाग्यवान हूँ। (प्रकट) अजी भाई साहब! यह तो आप मेरी वृथा ही बड़ाई करते हैं। मैं तो एक साधारण वकील हूँ। पर फिर भी महीने में दो चार हजार योंही आता ही है। अच्छा तो अब सारा मामला सुनाइये। मैं लिखता जाता हूँ। (जेबसे कागज पेन्सिल निकाल लिखने को तैयार होता है)

मंगल—(रजिष्टर खोलकर) तो इस पर कम से कम पाँच सौ रुपये का चन्दा आप भी लिख दीजिये।

डफाल—(चौंककर) हैं! चन्दा लिख दीजिये, कैसा चन्दा लिख दूँ?

मंगल—श्रीविश्वनाथ दातव्य-समिति काशी के सहायतार्थ चन्दा! मैंने आपसे अधिक नहीं माँगा है।

डफाल—(स्वतः) अररररर! यह तो पाँच सौ रुपये चन्दा माँग बैठा। अब क्या करूँ? बातें तो बड़ी लम्बी चौड़ी कर चुका, अब इसे क्या कह कर टालूँ? हाय! हाय! यह रोजीमें रोजा कहाँ से निकल आया! मैं तो इसे मुअक्किल समझे था। (सोचकर) बस इसे यहाँ बैठाऊँ और आप सटक जाऊँ। (प्रकट) अजी महाशय! आप फिर किसी समय कृपा करिये, इस समय तो मुझे एक जरूरी कामसे जाना है।

मंगल—तो क्या डर है। मैं फिर आ जाऊँगा, पर इसपर लिख तो दीजिये, फिर लेलेंगे, रुपये की क्या बात है।

डफाल—(स्वतः) लिखने में क्या खर्च होता है? देगा कौन? (प्रकट) हाँ हाँ लिख देता हूँ। रुपये की क्या बात है।

Taj Tahir Foundation

अभी कहीं से आ जाय तो अभी देदूँ। (रजिष्टर पर लिख देना)

मंगल—यह तो मैं सुन चुका हूँ कि आपके पास रुपये की कमी नहीं है। ईश्वर आपको आरोग्य रक्खें, आप बड़े ही दयालु हैं। [एक जमींदार का प्रवेश]

जमींदार—(आते ही) वकील साहब राम राम !

डफाल—ओ हो, आपको स्वयं कष्ट उठाना पड़ा ?

जमींदार—तो इसमें हर्ज क्या है, यह भी अपना घर है। (जेबसे नोटोंका एक बंडल निकाल कर) लीजिये, यह पाँच सौ रुपये, और कल अदालत खुलते ही काम हो जाय।

डफाल—(बड़ी प्रसन्नता से नोट लेनेके लिये हाथ बढ़ाते हुए) आपको बड़ा कष्ट हुआ।

मंगल—[नोट अपने हाथमें लेकर] लाइये मैं गिन लेता हूँ, आखिर गिनना तो होगा ही ।

[डफालचन्द मनमें बड़ा दुःखी होता है, मंगलसिंह पर दाँत पीसता है, मंगलसिंह नोट गिनने लग जाता है]

डफाल—(स्वतः) हाय हाय ! मैं तो जीता ही मरा। अररर बेमौत मरा। (प्रकट व्याकुलता को छिपाता हुआ) तो चलिये, चलिये, अन्दर चलिये। बैठकर बातें होंगी।

जमींदार—नहीं, अब मैं फिर मिलूँगा, आप सब लिख पढ़ कर तैयार करिये ।

मंगल—) नोट लेकर चलते हुए) अच्छा तो जय-शक्तिकी वकील साहब !

Taj Tahir Foundation

डफाल—(घबड़ाता हुआ) अजी ठहरो, ठहरो, जाते कहाँ हो ?

मंगल—महाशय, अब मुझे भी विलम्ब हो रहा है। कल आपकी प्रशंसा समाचार पत्रों में छप जायगी ।

डफाल—अजी ठहरो तो सही, यह रुपये तो देते जाओ।

मंगल—आखिर फिर भी तो आपको देना ही पड़ेगा। यह हिसाब ऊपर ही ऊपर निपट गया।अच्छा जयशक्ति की।

डफाल—(मंगलसिंह की बाँह पकड़ कर) वाह वाह ! यह तो अच्छी रही। लाओ, रुपये लाओ ।

जमींदार—बात क्या है ?

मंगल—(रजिष्टर दिखाकर) देखिये, वकील साहब ने कितने पुण्य का काम किया है। ५००) चन्दा लिख दिया है ।

जमींदार—वकील साहब ! आप तो बड़े धर्म्मात्मा हैं। अच्छा तो राम राम ! [जाता है]

मंगल—[जाते जाते] अच्छा तो चलता हूँ ।

डफाल—[आगे बढ़कर उसकी बाँह पकड़कर] अजी तुम तो वड़े ढीठ हो। रक्खो यहाँ रुपये ।

मंगल—[आश्चर्य्य से] हैं ! यह आप कैसा व्यवहार करते हैं ? क्या आपने चन्दा नहीं लिखा ?

डफाल—(कुढ़कर) तो क्या अभी देदूँ ? फिर ले जाना, इस समय नहीं दे सकता ।

मंगल—बात यह है कि चन्दे का रुपया बार बार नहीं

Taj Tahir Foundation

निकलता, इस वास्ते ले जाता हूँ, आपको क्या कमी है?

डफाल—(स्वतः) अरे यहाँ तो घर ही तबाह है। [प्रकट] अजी तुम सुनते नहीं। लाओ रुपये।

मंगल—अब तो मैं नहीं दे सकता, क्योंकि जमा कर चुका हूँ। अच्छा राम राम !

डफाल—[रोककर] हैं, तुम तो बढ़ते ही जाते हो। बस, रख दो रुपये।

मंगल—[जाते जाते] अजी जाने भी दीजिये।

(डफालचन्द मंगलसिंह को अपनी तरफ खींचता है, मंगल सिंह डफालचन्द को खींचता है)

डफाल—अजी ठहरो।

मंगल—बस जाने दो।

डफाल—मैं अपना रुपया नहीं छोड़ूँगा।

मंगल—मैं भी अपना नियम न तोड़ूँगा।

डफाल—मैं तेरा सर फोड़ूँगा।

मंगल—मैं रुपये लेकर छोड़ूँगा।

डफाल—अच्छा तो देख।

मंगल—बेटा तू भी देख।

*** गाना ***

डफाल—मैं मार मार डण्डों से मंगल तेरे सरको फोड़ूँगा।

मंगल—सहयोग तेरा मैं छोड़ूँगा पर रुपया कभी न छोड़ूँगा

डफाल—तू पक्का है बेईमान !

Taj Tahir Foundation

मंगल—तू है पूरा शैतान !

डफाल—मैं कानून के पंजे में तुझको फँसाऊँगा।

मंगल—मैं वकील साहब तुमको भी बंदर का नाच नचाऊँगा।

तू कुछ भी कहे मैं देशभक्त हूँ, तुझसे रिस्ता जोड़ूँगा॥मैं—

(दोनों का झगड़ते हुए जाना)

चतुर्थ दृश्य

(मनोहर, जुगल, सरोजिनी तथा सोहन का बाग में बैठे दिखायी देना)

मनोहर—क्यों भाई जुगलकिशोर जी ! मैं आपसे कुछ प्रार्थना करूँ, क्या आप स्वीकार करेंगे ?

जुगल—भाई आप ऐसे शब्दों से मुझे लज्जित न करें। मैं आपके उपकारों से दबा हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।

उठाया दुख प्रथम जो आपका कहना नहीं माना।
पड़ा था आँख पर परदा न मैंने तुमको पहचाना॥
उठाया संकट समय आपने आँखों से पर्दे को॥
बनाया आँख का सुरमा पतित पगतल के गर्दे को॥
तोड़ा था दुर्दिन में जो रिस्ता वो नाता जुड़ गया।
रह गया सोना, मुलम्मा आँच लगते उड़ गया॥

मनोहर—परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है कि अब आप

Taj Tahir Foundation

की "आँखों का नशा" उतर गया। संसार को पहिचान गये।

जुगल—कहिये मुझे क्या आज्ञा है?

मनोहर—तुम मेरी बातों को मानोगे,—स्वीकार करोगे? वचन दो।

जुगल—मैं सब तरह तैयार हूँ।

मनोहर—वचन से तो न फिरोगे?

जुगल—कभी नहीं।

मनोहर—अच्छा तो यह लेव। (कागज देना)

जुगल—यह क्या?

मनोहर—आपकी जायदाद के काग़ज़ात। जिन्हें मैंने सोहन के नाम से नाबालकी लड़कर अदालत से प्राप्त किया है।

जुगल—भाई! मैं आपको जितना धन्यवाद दूँ थोड़ा है। किन्तु मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप ही इसे अपनाइये। मुझे संसार से घृणा होगयी है। इसलिये मुझे पुनः माया-रूपी जंजाल में न फँसाइये।

धर्म्म में रहने दो मुझको धन से नहीं कुछ काम है।
दास हूँ मैं राम का, संसार मेरा राम है॥

सोहन—चाचाजी!

मनोहर—बस, तुम कुछ न बोलो। मैं देता हूँ, इसे स्वीकार करो।

सरोजिनी—बेटा, अपने चाचा की बात मानो। इनका हृदय न दुखाव।

(मनोहर का सोहन के हाथ में कागज देना । कामलता का कुरूपा और बेनी का कोढ़ी के वेष में आना)

कामलता—परमात्मा के नाम पर दो मुट्ठी अन्न देदो। भगवान भला करगे ।

बेनी—दया कर थोड़ा सा भोजन करादो ईश्वर तुम्हारा भण्डार भरेंगे ।

जुगल—कौन कामलता और बेनी ! अरे कोई है, निकालो इन पाजियों को यहाँ से ।

मनोहर—नहीं भाई, इन दरिद्रों की मदद करो ।

माना कि इन सभों ने तुम्हें कष्ट दिया है ।
माना कि इन सभों ने तुम्हें नष्ट किया है ॥
पर पाप के परिणाम में ये आज दुःखी हैं ।
इनके सहाय होइये कि आप सुखी हैं ॥

लो भिखारियों भिक्षा लो (पैसा देता है, वे लेते हैं)

कामलता—परपात्मा तुम्हें सुखी करें।

भोगते हैं भोग हम सब अपने अपने पाप का ।
धर्म्म के बल से सुखी होवेगा जीवन आपका ॥

॥ ड्राप ॥

शुभमस्तु

Taj Tahir Foundation

Taj Tahir Foundation

पति भक्ति

(सचित्र)

सामाजिक नाटक।

दूसरा संस्करण अभी छपा है। मूल्य ।।।)

मिलनेका पताः—[illegible]सा आदर्श बनारस सिटी।